CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2007 with Solution PDF-Set 2/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 20 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 1, 4, 7, 9, 19 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

पत्तियों ने क्या किया ?
संख्या के बल पर बस डालों को छाप लिया,
संख्या के बल पर ही चल-चपल रही हैं,
हवाओं के बल पर ही मचल रही हैं;
लेकिन हम अपने से खुले, खिले, फूले हैं —
रंग लिए, रस लिए, पराग लिए —
हमारी यश-गंध दूर-दूर-दूर फैली है,
भ्रमरों ने आकर हमारे गुन गाए हैं,
हम पर बौराए हैं।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में वक्ता, कथन की परिस्थिति, पंक्तियों का भाव और उनकी कलात्मक विशेषताएँ स्पष्ट की जाती हैं।
- प्रकृति के अंगों को बोलते और अपनी श्रेष्ठता का दावा करते दिखाना मानवीकरण है। फूलों के कथन में उनके सौंदर्य के साथ उनका अहंकार भी प्रकट होता है।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग पहचानिए प्रस्तुत पंक्तियाँ हरिवंशराय बच्चन की कविता 'जड़ की मुसकान' से ली गई हैं। कविता में वृक्ष के विभिन्न अंग अपनी उपलब्धियों पर गर्व करते हैं। यहाँ फूल पत्तियों की अपेक्षा स्वयं को श्रेष्ठ बताते हुए अपने रंग, रस, पराग और सुगंध का बखान करते हैं। उनके कथन का प्रसंग आत्मप्रशंसा और दूसरे के योगदान को छोटा समझने की प्रवृत्ति से जुड़ा है।

चरण 2: पत्तियों के प्रति फूलों का दृष्टिकोण समझिए फूल प्रश्न करते हैं कि पत्तियों ने आखिर ऐसा कौन-सा बड़ा काम किया है। उनके अनुसार पत्तियाँ केवल अधिक संख्या में होने के कारण डालियों पर छा गई हैं। उनकी चंचलता भी अपने बल पर नहीं है; हवा चलने पर ही वे हिलती और मचलती हैं। 'संख्या के बल पर' की पुनरावृत्ति से फूल पत्तियों की बहुलता को गुणहीन बताते हैं और उनके सौंदर्य तथा गति का महत्त्व कम करते हैं। यह फूलों का घमंड भरा कथन है, कवि द्वारा पत्तियों के वास्तविक योगदान का निषेध नहीं।

चरण 3: फूलों की आत्मप्रशंसा का अर्थ खोलिए इसके विपरीत फूल दावा करते हैं कि वे अपनी ही शक्ति से खुले, खिले और विकसित हुए हैं। उनके पास आकर्षक रंग, मधुर रस और पराग हैं। उनकी सुगंध दूर तक फैलती है, जिसे वे अपनी कीर्ति का प्रसार मानते हैं। भ्रमरों का उनके पास आकर गुनगुनाना उन्हें अपने गुणों की प्रशंसा लगता है। 'हम पर बौराए हैं' से फूलों के सौंदर्य और रस पर मोहित भ्रमरों की दशा सामने आती है। फूल अपनी शोभा के पीछे वृक्ष के दूसरे अंगों, विशेषतः जड़ के आधारभूत योगदान, को भुला रहे हैं।

चरण 4: काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए फूलों का बोलना, तुलना करना और यश का दावा करना मानवीकरण है। 'दूर-दूर-दूर' में पुनरुक्ति सुगंध के व्यापक प्रसार को प्रभावशाली बनाती है। 'खुले, खिले, फूले' की क्रमबद्ध क्रियाएँ विकास का चित्र उपस्थित करती हैं। रंग, रस और गंध के उल्लेख से दृश्य, स्वाद तथा गंध संबंधी अनुभूतियाँ उभरती हैं। सरल खड़ी बोली और मुक्तछंद में संवादात्मक शैली है; फूलों की डींग के माध्यम से आत्ममुग्ध मनुष्य पर व्यंग्य किया गया है।

चरण 5: निष्कर्ष काव्यांश में फूल अपनी शोभा और लोकप्रियता पर गर्व करके पत्तियों को तुच्छ बताते हैं। उनके अहंकारपूर्ण कथन के माध्यम से कविता उस प्रवृत्ति को उजागर करती है जिसमें व्यक्ति अपनी सफलता का श्रेय केवल स्वयं को देकर उसके आधार बने दूसरों को भूल जाता है।

त्वरित सुझाव: 'पत्तियों ने क्या किया' और 'हम अपने से' को साथ पढ़िए; इन्हीं से फूलों की तुलना, आत्मप्रशंसा और अंतर्निहित व्यंग्य स्पष्ट होते हैं।

अथवा

1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

आज पहली बार -
थकी शीतल हवा में
शीश मेरा उठा कर,
चुपचाप अपनी गोद में रक्खा,
और जलते हुए मस्तक पर
काँपता-सा हाथ रख कर कहा :
"सुनो, मैं भी पराजित हूँ।"

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में काव्यांश की परिस्थिति और भावक्रम को स्पष्ट किया जाता है। यहाँ कवि की पराजय की अनुभूति को हवा के मानवीकरण द्वारा प्रकृति की संवेदना से जोड़ा गया है।
- हवा को गोद में सिर रखने, हाथ से मस्तक छूने और बोलने जैसी मानवीय क्रियाएँ करते दिखाना मानवीकरण है। इस कल्पना में प्रकृति कवि के दुःख की आत्मीय सहभागी बनती है।

चरण 1: प्रसंग और भावभूमि स्पष्ट कीजिए प्रस्तुत काव्यांश 'आज पहली बार' कविता का है। इसमें कवि ने अपनी थकान और पराजय के बीच हवा से प्राप्त आत्मीय सांत्वना का मार्मिक क्षण चित्रित किया है। कवि की कल्पना में हवा एक स्नेहमयी सत्ता बनकर उसका सिर अपनी गोद में रखती है और उसके ताप को शांत करना चाहती है। किंतु वह स्वयं भी पराजय से आहत है। 'आज पहली बार' इस अनुभव की विशेषता बताता है; हवा के अपनी दुर्बलता स्वीकार करने से कवि और प्रकृति के बीच दुःख की साझेदारी का भाव उभरता है।

चरण 2: मौन और स्नेहपूर्ण क्रियाओं का अर्थ समझिए शीतल हवा का थका हुआ होना वातावरण को उदास और शिथिल बनाता है। मानवीकृत हवा कवि का सिर धीरे से उठाकर अपनी गोद में रख लेती है। 'चुपचाप' शब्द बताता है कि उस समय लंबे उपदेश या सांत्वना के बड़े-बड़े वाक्यों की अपेक्षा आत्मीय निकटता अधिक महत्त्वपूर्ण है। हवा की गोद का आश्रय कवि के असहाय मन को सहारा देता है। शीतल हवा और जलते हुए मस्तक का विरोध बाहरी ठंडक के बीच भी बने हुए मानसिक संताप को तीव्र करता है।

चरण 3: अंतिम कथन की मार्मिकता खोलिए जलते मस्तक पर रखा हवा का 'काँपता-सा हाथ' उसकी अपनी व्याकुलता और अस्थिरता का संकेत करता है। कवि की कल्पना में हवा केवल उसके दुःख को शांत करने वाली बाहरी शक्ति नहीं है; वह स्वयं भी पीड़ा अनुभव करती है। 'सुनो, मैं भी पराजित हूँ' में 'भी' अत्यंत अर्थपूर्ण है; इससे कवि की पराजय का अनुभव प्रकृति तक फैल जाता है। यह स्वीकार कवि और हवा को एक ही भावभूमि पर ले आता है। यहाँ स्नेह का बल विजय के आश्वासन में नहीं, बल्कि पीड़ा को समझने और उसमें सहभागी बनने में है।

चरण 4: भाषा और बिंब-सौंदर्य बताइए पूरे दृश्य का प्रमुख कलात्मक आधार हवा का मानवीकरण है। उसका थकना, गोद में सिर रखना, काँपते हाथ से मस्तक छूना और अपनी पराजय स्वीकार करना मानवीय क्रियाएँ हैं। 'जलते हुए मस्तक' और 'काँपता-सा हाथ' स्पर्श तथा गति के बिंबों द्वारा मन की व्यथा मूर्त करते हैं। छोटी पंक्तियाँ और विराम कथन की धीमी, संकोचपूर्ण लय बनाते हैं। सरल खड़ी बोली, मुक्तछंद और अंत में आया सीधा संवाद भाव को सहज तथा प्रभावपूर्ण बनाते हैं। प्रकृति और मनुष्य की आत्मीयता से दृश्य की करुणा और गहरी हो जाती है।

चरण 5: निष्कर्ष काव्यांश में कवि और मानवीकृत हवा की साझा पीड़ा व्यक्त हुई है। हवा का मौन आश्रय, स्नेहपूर्ण स्पर्श और अपनी पराजय की स्वीकृति प्रकृति को कवि की आत्मीय सहचरी बना देते हैं। इस प्रकार कवि के अंतर्मन की व्यथा प्रकृति के साथ तादात्म्य पाकर मार्मिक हो उठती है।

त्वरित सुझाव: हवा की गोद, हाथ और वाणी को मानवीकरण के उदाहरण बनाइए; 'भी' शब्द से कवि तथा हवा के बीच साझा पराजय और आत्मीयता का संबंध स्पष्ट कीजिए।

2(क). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

अवधि गई अअजूँ नहिं आए, कतहुँ रहे चित चोर।।
कबहूँ नैन निरख नहिं देखे, मारग चितवत तोर।।
दादू ऐसे आतुर बिरहणि, जैसे चांद चकोर।। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-सौंदर्य में भाव-सौंदर्य और अभिव्यक्ति-सौंदर्य दोनों बताए जाते हैं। अलंकार या भाषा की विशेषता के साथ उसका पाठगत उदाहरण देना चाहिए।
- संतकाव्य में जीवात्मा का परमात्मा से मिलन चाहना विरहिणी के प्रिय-मिलन की उत्कंठा के रूप में व्यक्त हो सकता है। यहाँ भक्त का विरह इसी रूप में प्रकट है।

चरण 1: भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए दादू ने प्रिय के आगमन की अवधि बीत जाने पर भी उसके न आने से उत्पन्न व्याकुलता चित्रित की है। विरहिणी पूछती है कि उसका चित्त चुराने वाला प्रिय कहाँ रह गया है। आँखों ने उसे कभी देखा नहीं, फिर भी वे उसका मार्ग देखती रहती हैं। इस विरोधाभासी-से अनुभव में अदृश्य परमात्मा के प्रति भक्त का अटूट आकर्षण व्यक्त होता है। मिलन की उत्कंठा में समय लंबा लगता है और प्रतीक्षा समाप्त नहीं होती। लौकिक विरह के सहारे आध्यात्मिक प्रेम की तीव्रता को सहज और अनुभूतिपूर्ण बनाया गया है।

चरण 2: अलंकार और बिंब पहचानिए 'जैसे चांद चकोर' में स्पष्ट उपमा है। जिस प्रकार चकोर चंद्रमा को एकटक निहारता और उसे पाने की आकांक्षा करता है, उसी प्रकार विरहिणी अपने प्रिय के लिए आतुर है। यह उपमा अनन्य प्रेम, एकाग्रता और तड़प को मूर्त करती है। 'चित चोर' में च ध्वनि की आवृत्ति से अनुप्रास का सौंदर्य आता है; यह संबोधन प्रिय के मन मोह लेने वाले रूप का संकेत भी है। 'मारग चितवत' में मार्ग की ओर लगी आँखों का दृश्य-बिंब प्रतीक्षा को सजीव बनाता है।

चरण 3: भाषा, लय और रस बताइए 'अजूँ', 'नहिं', 'कतहुँ', 'नैन', 'बिरहणि' जैसे लोकप्रचलित रूप भाषा को सरल, आत्मीय और संतकाव्य की सधुक्कड़ी परंपरा के अनुकूल बनाते हैं। चोर, तोर और चकोर की तुक तथा पद की लय गेयता उत्पन्न करती है। विरह की पीड़ा में विप्रलंभ शृंगार का स्वरूप दिखाई देता है, जिसका आध्यात्मिक आशय भक्त और भगवान का संबंध है। प्रश्नवाचक कथन विरहिणी की अधीरता को और तीव्र करता है।

चरण 4: निष्कर्ष पद का सौंदर्य भक्त की विरह-वेदना, चंद्रमा-चकोर की उपमा, प्रतीक्षारत आँखों के बिंब और सहज लयात्मक लोकभाषा में है। इन साधनों से परमात्मा के प्रति एकनिष्ठ प्रेम और मिलन की आतुरता प्रभावपूर्ण बनी है।

त्वरित सुझाव: भाव में भक्त का विरह, अलंकार में 'जैसे चांद चकोर' और भाषा में 'कतहुँ' या 'बिरहणि' का उदाहरण दें; तभी काव्य-सौंदर्य का उत्तर पाठ से जुड़ा रहेगा।

2(ख). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

आज तुम राजकुँअर,
समर सरताज।
मुक्त हो सदा ही तुम,
बाधा-विहीन-बंध छंद ज्यों,
डूबे आनंद में सच्चिदानंद-रूप। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-सौंदर्य में भाव की विशेषता के साथ भाषा, बिंब और अलंकार का प्रभाव स्पष्ट किया जाता है।

- इस अंश में वीरता, स्वतंत्रता और आत्मिक आनंद का चित्रण है; मुक्त छंद की उपमा स्वतंत्र व्यक्तित्व को मूर्त करती है।

चरण 1: भाव-सौंदर्य स्पष्ट करें कवि संबोधित व्यक्तित्व को 'राजकुँअर' तथा 'समर सरताज' कहकर उसकी गरिमा और वीरता का गौरवगान करता है। वह बाधाओं से मुक्त और आनंद में निमग्न है। उसकी स्वतंत्रता केवल बाहरी बंधनों का अभाव नहीं, बल्कि भीतर की स्वच्छंद तथा आनंदमयी अवस्था भी है। 'सच्चिदानंद-रूप' पद में सत्य, चेतना और आनंद की एकता का भाव है, जिससे व्यक्तित्व की उदात्तता उभरती है।

चरण 2: उपमा और शब्द-सौंदर्य पहचानें 'बाधा-विहीन-बंध छंद ज्यों' में स्वतंत्र व्यक्तित्व की तुलना बंधनरहित छंद से की गई है। 'ज्यों' उपमावाचक शब्द है; अत: यहाँ उपमा अलंकार है। जैसे मुक्त छंद निश्चित छंद-बंधन से स्वतंत्र होता है, वैसे ही संबोधित व्यक्ति बाधाओं से मुक्त है। 'समर सरताज' में 'स' ध्वनि की आवृत्ति अनुप्रास का सौंदर्य उत्पन्न करती है। संस्कृतनिष्ठ पदावली में ओज और गंभीरता है। छोटे-बड़े वाक्यखंडों तथा संबोधन से कथन आत्मीय और प्रभावपूर्ण बन गया है।

चरण 3: निष्कर्ष वीरता, निर्बंध स्वतंत्रता और आत्मिक आनंद का उदात्त चित्र इस अंश का भाव-सौंदर्य है। मुक्त छंद की सटीक उपमा, अनुप्रास और ओजपूर्ण भाषा उसके शिल्प-सौंदर्य को बढ़ाते हैं।

त्वरित सुझाव: 'ज्यों' के दोनों ओर तुलना के विषय पहचानें और 'समर सरताज' में दोहराई गई ध्वनि बताएँ; अलंकार का नाम उसके उदाहरण सहित लिखें।

2(ग). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

वायु तुम्हारी उज्ज्वल गाथा
सूर्य तुम्हारा रथ है,
बीहड़ काँटों भरा कीचमय
एक तुम्हारा पथ है।
यह शासन, यह कला, तपस्या
तुझे कभी मत भूलें। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-सौंदर्य बताते समय काव्यांश में व्यक्त श्रम, संघर्ष और सम्मान की भावना स्पष्ट करनी चाहिए।
- प्राकृतिक बिंब, रूपक और संबोधन-शैली किसी व्यक्तित्व की व्यापकता तथा कठिन जीवन को प्रभावशाली बनाते हैं।

चरण 1: संघर्ष और गौरव का भाव स्पष्ट करें कवि संबोधित व्यक्ति के संघर्षपूर्ण जीवन और उसकी महत्ता का चित्रण करता है। वायु उसकी उज्ज्वल गाथा है और सूर्य उसका रथ है; इन विराट प्राकृतिक उपादानों से उसका गौरव उभरता है। दूसरी ओर उसका मार्ग बीहड़, काँटों से भरा और कीचड़युक्त है। इससे स्पष्ट होता है कि उसका जीवन कठिनाइयों और श्रम से भरा है। कवि चाहता है कि शासन, कला और तपस्या उससे विमुख न हों तथा उसके योगदान को कभी न भूलें। यहाँ कठिन जीवन के प्रति संवेदना और उसके सम्मान की आकांक्षा साथ-साथ उपस्थित हैं।

चरण 2: बिंब और भाषा का सौंदर्य बताएँ 'वायु तुम्हारी उज्ज्वल गाथा' और 'सूर्य तुम्हारा रथ' में उपमेय पर उपमान का सीधा आरोप है, इसलिए रूपक का सौंदर्य है। 'बीहड़ काँटों भरा कीचमय' पथ एक सजीव दृश्य-बिंब बनाता है और जीवन की बाधाओं का संकेत भी देता है। 'यह शासन, यह कला, तपस्या' में 'यह' की आवृत्ति कथन में बल और लय लाती है। 'तुम्हारी', 'तुम्हारा' और 'तुझे' के प्रयोग से संबोधन आत्मीय बनता है। भाषा चित्रात्मक है; प्रकृति की विराटता और कठिन पथ का चित्र भाव को मूर्त कर देता है।

चरण 3: निष्कर्ष संघर्षशील जीवन का गौरव और उसके प्रति सम्मान इस अंश का केंद्रीय सौंदर्य है। रूपक, प्राकृतिक बिंब, लयात्मक आवृत्ति और आत्मीय संबोधन इस भावना को प्रभावपूर्ण बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: भाव के लिए कठिन पथ और सम्मान की कामना जोड़ें; शिल्प के लिए वायु, सूर्य और पथ के बिंबों का उदाहरण देकर प्रभाव समझाएँ।

3(क). किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए :

'स्मृतियाँ' कविता के आधार पर प्राचीन भारतीय नारी के आदर्शों का उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नारी के आदर्शों का उल्लेख करते समय उसके नैतिक गुण और कर्तव्यनिष्ठ आचरण को स्पष्ट किया जाता है।
- त्याग और स्नेह के साथ धैर्य, आत्मसम्मान तथा दृढ़ता भी आदर्श नारी के व्यक्तित्व के अंग हैं।

चरण 1: प्रेम और निष्ठा के आदर्श बताएँ 'स्मृतियाँ' में प्राचीन भारतीय नारी प्रेम, पवित्रता, त्याग और निष्ठा की प्रतीक है। पति के प्रति अटूट समर्पण और कर्तव्यपालन उसके जीवन के प्रमुख आदर्श हैं। वह अपने व्यक्तिगत सुख से बढ़कर प्रियजनों के कल्याण को महत्त्व देती है। उसका स्नेह केवल भावुकता नहीं, सेवा और त्याग के आचरण में व्यक्त होता है।

चरण 2: धैर्य और नैतिक दृढ़ता स्पष्ट करें विपरीत परिस्थितियों में भी वह धैर्य और मर्यादा बनाए रखती है। कठिनाइयाँ उसे कर्तव्य से विमुख नहीं करतीं। उसके कोमल हृदय के साथ आत्मसम्मान और चरित्र की दृढ़ता भी जुड़ी है। इस प्रकार नारी का आदर्श रूप प्रेममयी और त्यागशील होने के साथ साहसी तथा अपने जीवन-मूल्यों के प्रति अडिग भी है।

चरण 3: निष्कर्ष प्राचीन भारतीय नारी के मुख्य आदर्श प्रेम, पातिव्रत्य, त्याग, सेवा, धैर्य, मर्यादा और कर्तव्यनिष्ठा हैं; इनसे उसका नैतिक गौरव प्रकट होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में गुणों की सूची भर न दें; प्रेम और त्याग के साथ संकट में धैर्य तथा कर्तव्यनिष्ठा का अर्थ भी एक वाक्य में समझाएँ।

3(ख). किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए :

'वीरांगना' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि नारी की तुलना लोहे से क्यों की गई है। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी वस्तु से तुलना करते समय उसके उन गुणों को देखना चाहिए जो वर्णित व्यक्तित्व में भी उपस्थित हैं।
- यहाँ लोहा शक्ति, सहनशीलता और दृढ़ता का प्रतीक है; वीरांगना का रूप नारी की आंतरिक शक्ति को सामने लाता है।

चरण 1: लोहे के गुण समझें लोहा कठोर, मजबूत और आघात सहने वाला पदार्थ है। वह कठिन परिस्थितियों में उपयोगी सिद्ध होता है और तपकर तथा ढलकर अनेक रूप धारण करता है। उससे तुलना किसी व्यक्ति के बाहरी रूप की अपेक्षा उसकी सहनशक्ति, दृढ़ता और सामर्थ्य को व्यक्त करती है।

चरण 2: नारी की शक्ति से संबंध जोड़ें 'वीरांगना' में नारी कठिनाइयों और संघर्षों का साहसपूर्वक सामना करती है। वह बाहर से कोमल दिखाई देने पर भी भीतर से दृढ़ है; दुःख और आघात उसे सहज ही पराजित नहीं कर पाते। परिस्थितियों की कठोरता सहकर भी वह अपनी जिम्मेदारियाँ निभाती है। इसीलिए लोहे की दृढ़ता और सहनशीलता नारी की आंतरिक शक्ति को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त हैं।

चरण 3: निष्कर्ष नारी को लोहे के समान इसलिए कहा गया है कि उसमें संकट सहने की क्षमता, अदम्य साहस और दृढ़ता है। यह तुलना उसे दुर्बल मानने के स्थान पर उसके शक्तिशाली रूप को प्रतिष्ठित करती है।

त्वरित सुझाव: तुलना का उत्तर 'लोहे का गुण' और 'नारी में उसी गुण का रूप' जोड़कर लिखें; केवल दोनों को कठोर कह देना पर्याप्त नहीं है।

3(ग). किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए :

'आदमी का अनुपात' कविता का संदेश अपने शब्दों में लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में विराट अस्तित्व की तुलना में मनुष्य के लघु होने और उसके बड़े होने के अहंकार का विरोध दिखाई देता है।
- कविता का संदेश समझने के लिए स्वार्थ, ईर्ष्या और अहंकार से उत्पन्न मानवीय विभाजन को पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: मनुष्य का वास्तविक अनुपात समझें मनुष्य इस विराट अस्तित्व का केवल एक लघु अंश है। इस व्यापक संसार में उसका स्थान सीमित है, पर वह अपने इस वास्तविक अनुपात को भूल जाता है। स्वार्थ, ईर्ष्या और अहंकार के वशीभूत होकर वह स्वयं को बहुत बड़ा मानने लगता है। उसके वास्तविक अस्तित्व और अपने बारे में उसकी धारणा का यही अंतर कविता की मूल चिंता है।

चरण 2: विभाजन की प्रवृत्ति और संदेश स्पष्ट करें स्वयं को बड़ा समझने का अहंकार मनुष्य को दूसरों से अलग करता है। वह जाति, धर्म और क्षेत्रीयता के आधार पर अपने को बाँटने लगता है तथा साझा मानवता को भूल जाता है। कविता इस संकीर्ण दृष्टि पर प्रश्न उठाती है। उसका संदेश है कि मनुष्य विराट अस्तित्व में अपना वास्तविक स्थान पहचाने, स्वार्थ और ईर्ष्या से ऊपर उठे तथा अहंकारजनित भेदभाव छोड़कर मानवीय एकता का सम्मान करे।

चरण 3: निष्कर्ष 'आदमी का अनुपात' का संदेश है कि मनुष्य विराट अस्तित्व का लघु अंश होकर भी स्वार्थ, ईर्ष्या और अहंकार में स्वयं को बड़ा मानता है तथा जाति, धर्म और क्षेत्रीयता में बँट जाता है। उसे अपना वास्तविक अनुपात पहचानकर इन संकीर्ण भेदों से ऊपर उठना चाहिए।

त्वरित सुझाव: उत्तर में विराट अस्तित्व का लघु अंश, बड़े होने का अहंकार और जाति, धर्म, क्षेत्रीयता से उत्पन्न विभाजन को क्रम से जोड़ें।

4(क). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

हमें कभी अपने समाज की कुरीतियाँ, अपने सत्ताधारी नेताओं की स्वार्थलिप्साओं को अपने देश-प्रेम से गडमड नहीं करना चाहिए। मेरे लिए, मेरा देश मेरे राजनीतिक सैद्धांतिक आग्रहों से कहीं ऊपर है .... या होना चाहिए। गांधीजी से बड़ा भारत-प्रेमी कौन हो सकता था, लेकिन वह भारतीय समाज के सबसे बड़े आलोचक थी थे — क्योंकि जो व्यक्ति हृदय से अपने देश से प्यार करता है, उसे ही आलोचना करने का अधिकार भी प्राप्त होता है।

लेखक देश की आलोचना का अधिकार किसे देना चाहता है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश का उत्तर लेखक के कथन से निकालना चाहिए; यहाँ आलोचना के अधिकार का आधार सच्चा देशप्रेम है।
- देश के प्रति प्रेम और समाज की बुराइयों की आलोचना परस्पर विरोधी नहीं हैं।

चरण 1: अधिकार का पात्र पहचानें लेखक देश की आलोचना का अधिकार उस व्यक्ति को देना चाहता है जो हृदय से अपने देश से प्यार करता है। वह स्पष्ट कहता है कि सच्चा देशप्रेमी ही आलोचना का अधिकारी है। इस अधिकार का आधार किसी दल या विचारधारा से जुड़ना नहीं, देश के प्रति निष्कपट प्रेम होना चाहिए।

चरण 2: कारण और उदाहरण स्पष्ट करें सच्चा देशप्रेमी देश तथा समाज का हित चाहता है, इसलिए उसकी कुरीतियों और नेताओं की स्वार्थलिप्सा की आलोचना करता है। उसकी आलोचना सुधार की भावना से प्रेरित होती है। लेखक गांधीजी का उदाहरण देता है: वे महान भारत-प्रेमी होने के साथ भारतीय समाज के बड़े आलोचक भी थे। इससे सिद्ध होता है कि दोषों का विरोध करना देश के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति हो सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक के अनुसार हृदय से देश को चाहने वाला व्यक्ति ही उसकी आलोचना का अधिकारी है, क्योंकि वह देश के हित और सुधार के लिए बुराइयों का विरोध करता है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के 'किसे' का उत्तर सच्चा देशप्रेमी और 'क्यों' का उत्तर देशहित में सुधार लिखें; समर्थन में गांधीजी का उदाहरण दें।

4(ख). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

हमें कभी अपने समाज की कुरीतियाँ, अपने सत्ताधारी नेताओं की स्वार्थलिप्साओं को अपने देश-प्रेम से गडमड नहीं करना चाहिए। मेरे लिए, मेरा देश मेरे राजनीतिक सैद्धांतिक आग्रहों से कहीं ऊपर है .... या होना चाहिए। गांधीजी से बड़ा भारत-प्रेमी कौन हो सकता था, लेकिन वह भारतीय समाज के सबसे बड़े आलोचक थी थे — क्योंकि जो व्यक्ति हृदय से अपने देश से प्यार करता है, उसे ही आलोचना करने का अधिकार भी प्राप्त होता है।

आशय स्पष्ट कीजिए — "मेरे लिए मेरा देश मेरे राजनीतिक, सैद्धांतिक आग्रहों से कहीं ऊपर है।" [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आशय स्पष्ट करते समय कथन के केंद्रीय भाव को गद्यांश के संदर्भ में समझना चाहिए। यहाँ देश के प्रति निष्ठा और व्यक्तिगत राजनीतिक विचारों का संबंध मुख्य है।
- देशहित सर्वोपरि है; किसी दल, नेता या सिद्धांत से लगाव देश के व्यापक हित का विकल्प नहीं हो सकता।

चरण 1: राजनीतिक आग्रह का अर्थ समझिए राजनीतिक और सैद्धांतिक आग्रह से आशय अपने पसंदीदा दल, विचारधारा या सिद्धांत के प्रति दृढ़ लगाव है। लेखक इन्हें अपनी व्यक्तिगत मान्यताएँ मानता है, जबकि देश समूचे समाज और उसके व्यापक हितों से जुड़ा है। इसलिए निजी मान्यता को देश से बड़ा मानना उचित नहीं है।

चरण 2: देश के प्रति निष्ठा का आशय स्पष्ट कीजिए यदि किसी राजनीतिक विचार या नेता के स्वार्थ और देशहित में टकराव हो, तो व्यक्ति को देशहित चुनना चाहिए। इसी कारण समाज की कुरीतियों या नेताओं की स्वार्थलिप्सा का विरोध करना देश-विरोध नहीं है। गद्यांश में गांधीजी का उदाहरण बताता है कि सच्चा देशप्रेम समाज की कमियों को पहचानकर सुधारने की प्रेरणा देता है।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि लेखक के लिए देश का कल्याण निजी राजनीतिक विचारों और सिद्धांतों से बढ़कर है। इन आग्रहों के कारण देशहित की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए; आवश्यक होने पर देश के हित में उनकी आलोचना या समीक्षा करनी चाहिए।

त्वरित सुझाव: आशय में 'देशहित सर्वोपरि' लिखकर उसे निजी राजनीतिक आग्रह और सुधारात्मक आलोचना से जोड़िए।

4(ग). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

हमें कभी अपने समाज की कुरीतियाँ, अपने सत्ताधारी नेताओं की स्वार्थलिप्साओं को अपने देश-प्रेम से गडमड नहीं करना चाहिए। मेरे लिए, मेरा देश मेरे राजनीतिक सैद्धांतिक आग्रहों से कहीं ऊपर है .... या होना चाहिए। गांधीजी से बड़ा भारत-प्रेमी कौन हो सकता था, लेकिन वह भारतीय समाज के सबसे बड़े आलोचक थी थे — क्योंकि जो व्यक्ति हृदय से अपने देश से प्यार करता है, उसे ही आलोचना करने का अधिकार भी प्राप्त होता है।

देश-प्रेम में कौन-से तत्त्व बाधक हैं और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में देशप्रेम का अर्थ देश और समाज के व्यापक कल्याण के प्रति निष्ठा है। उसे किसी नेता या सामाजिक बुराई के समर्थन से नहीं जोड़ना चाहिए।
- 'कौन-से' और 'क्यों' के उत्तर में बाधक तत्त्वों के साथ उनका हानिकारक प्रभाव भी स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: बाधक तत्त्व पहचानिए समाज की कुरीतियाँ, सत्ताधारी नेताओं की स्वार्थलिप्सा तथा संकीर्ण राजनीतिक और सैद्धांतिक आग्रह देशप्रेम में बाधक हैं। विशेष रूप से इन बुराइयों या आग्रहों को देशप्रेम के साथ गड्डमड्ड करना हानिकारक है। इससे व्यक्ति देश और किसी विशेष नेता, दल अथवा सामाजिक प्रथा में अंतर नहीं कर पाता।

चरण 2: बाधा उत्पन्न होने का कारण बताइए जब व्यक्ति निजी स्वार्थ, दलगत निष्ठा अथवा विचारधारा को देश से ऊपर रखता है, तब व्यापक देशहित पीछे छूट जाता है। वह समाज की कमियों की आलोचना को भी देश का विरोध समझ सकता है। इससे सुधार रुकता है, जबकि गांधीजी का उदाहरण बताता है कि सच्चा देशप्रेमी अपने समाज की बुराइयों का विरोध करके उसे बेहतर बनाने का प्रयास करता

है।

चरण 3: निष्कर्ष कुरीतियाँ, नेताओं की स्वार्थलिप्सा और देशहित से ऊपर रखे गए राजनीतिक-सैद्धांतिक आग्रह देशप्रेम के बाधक हैं, क्योंकि वे व्यापक हित की जगह संकीर्ण हितों को प्रधानता देते और आवश्यक सामाजिक सुधार को रोकते हैं।

त्वरित सुझाव: गद्यांश से तीन बाधक तत्त्व चुनिए और प्रत्येक को 'देशहित की उपेक्षा' या 'सुधार में बाधा' से जोड़िए।

अथवा

4(क). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जिस प्रकार वनों का वृक्षों से, नदियों का जल से सम्बन्ध है, उसी प्रकार नदियों का वनों से भी सम्बन्ध मानना चाहिए। वनों के रहते नदियाँ स्वयं फूट पड़ती है, प्रवाहित होती रहती हैं। वन नहीं रहेंगे तो नदियाँ नहीं रहेंगी। नदियों के न रहने पर हमारी संस्कृति विच्छिन्न हो जाएगी। हमारा जीवन-स्रोत ही सूख जाएगा।

"वन नहीं रहेंगे तो नदियाँ नहीं रहेंगी" - कथन को स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में वन और नदियाँ एक-दूसरे से जुड़े प्राकृतिक जीवनाधार हैं। किसी एक की रक्षा को दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।
- कथन का आशय गद्यांश की इस स्थापना से स्पष्ट होता है कि वनों के रहते नदियाँ फूटती और प्रवाहित होती रहती हैं।

चरण 1: वनों पर नदियों की निर्भरता समझिए लेखक के अनुसार जिस प्रकार वृक्षों से वन और जल से नदियाँ बनती हैं, उसी प्रकार नदियों के बने रहने का संबंध वनों से है। वन नदियों के उद्गम और उनके निरंतर प्रवाह के लिए सहायक हैं। इसीलिए गद्यांश में कहा गया है कि वनों के रहते नदियाँ स्वयं फूट पड़ती हैं और बहती रहती हैं।

चरण 2: वन-विनाश के परिणाम को जोड़िए वनों का नष्ट होना नदियों को बनाए रखने वाले प्राकृतिक आधार का नष्ट होना है। जब वह आधार नहीं रहेगा, तो नदियों का प्रवाह भी सुरक्षित नहीं रह सकेगा और उनके सूखने का संकट पैदा होगा। लेखक इस संबंध के माध्यम से चेतावनी देता है कि नदियों की रक्षा के लिए वनों का बना रहना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष 'वन नहीं रहेंगे तो नदियाँ नहीं रहेंगी' का आशय है कि वन नदियों के उद्गम और सतत प्रवाह के सहायक हैं। वनों के विनाश से नदियों का अस्तित्व संकट में पड़ता है और हमारा जीवन-स्रोत सूखने लगता है।

त्वरित सुझाव: व्याख्या में 'वनों का अस्तित्व, नदियों का प्रवाह और जीवन-स्रोत' की कारण-परिणाम शृंखला लिखिए।

4(ख). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जिस प्रकार वनों का वृक्षों से, नदियों का जल से सम्बन्ध है, उसी प्रकार नदियों का वनों से भी सम्बन्ध मानना चाहिए। वनों के रहते नदियाँ स्वयं फूट पड़ती है, प्रवाहित होती रहती हैं। वन नहीं रहेंगे तो नदियाँ नहीं रहेंगी। नदियों के न रहने पर हमारी संस्कृति विच्छिन्न हो जाएगी। हमारा जीवन-स्रोत ही सूख जाएगा।

नदियों के न रहने पर हमारी संस्कृति कैसे विच्छिन्न हो सकती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में नदियों को केवल जलधाराएँ नहीं, हमारे जीवन और संस्कृति का आधार माना गया है। प्राकृतिक जीवन-स्रोत और सांस्कृतिक जीवन परस्पर जुड़े हैं।
- 'विच्छिन्न' का अर्थ है निरंतरता का टूट जाना। प्रश्न में नदियों के अभाव का संस्कृति पर पड़ने वाला प्रभाव समझाना है।

चरण 1: जीवन-स्रोत और संस्कृति का संबंध समझिए गद्यांश नदियों को हमारा जीवन-स्रोत कहता है। मनुष्य का सामूहिक और सांस्कृतिक जीवन उसके जीवित रहने के आधारों से अलग नहीं है। जब नदियाँ जीवन को बनाए रखती हैं, तभी उनसे जुड़ा समाज अपनी जीवन-पद्धति और सांस्कृतिक परंपराओं को आगे बढ़ा सकता है।

चरण 2: सांस्कृतिक निरंतरता टूटने का कारण बताइए नदियों के न रहने पर जीवन का यह आधार सूख जाएगा। फलस्वरूप नदियों से जुड़ी सामाजिक जीवन-पद्धति और सांस्कृतिक संबंधों की निरंतरता भी टूटने लगेगी। लेखक का आशय है कि प्रकृति का विनाश केवल भौतिक क्षति नहीं है; उससे हमारी संस्कृति को जीवित रखने वाली परिस्थितियाँ भी समाप्त होती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष नदियाँ हमारे जीवन का आधार हैं और संस्कृति उसी जीवन में विकसित तथा सुरक्षित रहती है। नदियों के समाप्त होने से जीवन-स्रोत सूखेगा तथा उससे जुड़ी सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं का क्रम टूटेगा; इसी अर्थ में हमारी संस्कृति विच्छिन्न हो सकती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में 'नदी, जीवन-स्रोत और संस्कृति की निरंतरता' को जोड़िए; केवल पानी की कमी लिखकर न छोड़िए।

4(ग). निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जिस प्रकार वनों का वृक्षों से, नदियों का जल से सम्बन्ध है, उसी प्रकार नदियों का वनों से भी सम्बन्ध मानना चाहिए। वनों के रहते नदियाँ स्वयं फूट पड़ती है, प्रवाहित होती रहती हैं। वन नहीं रहेंगे तो नदियाँ नहीं रहेंगी। नदियों के न रहने पर हमारी संस्कृति विच्छिन्न हो जाएगी। हमारा जीवन-स्रोत ही सूख जाएगा।

वनों और नदियों को बनाए रखने के लिए आप क्या-क्या उपाय आवश्यक समझते हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश का केंद्रीय विचार है कि वन नदियों को और नदियाँ जीवन तथा संस्कृति को बनाए रखती हैं। इसलिए दोनों का संरक्षण साथ-साथ आवश्यक है।
- प्रश्न स्वयं उपाय सुझाने को कहता है। उत्तर में वनों की रक्षा, नदी के जल की स्वच्छता तथा समाज की भागीदारी से जुड़े व्यावहारिक उपाय होने चाहिए।

चरण 1: वन संरक्षण के उपाय दीजिए पेड़ों की अंधाधुंध कटाई रोकनी चाहिए और खाली भूमि तथा नदी के जलग्रहण क्षेत्रों में वृक्षारोपण करना चाहिए। केवल पौधे लगाना पर्याप्त नहीं है; उनकी नियमित देखभाल भी करनी होगी। जंगलों को आग तथा अवैध कटाई से बचाने के लिए स्थानीय लोगों की भागीदारी और वन-संरक्षण नियमों का पालन आवश्यक है।

चरण 2: नदियों की रक्षा के उपाय दीजिए नदियों में कूड़ा, प्लास्टिक तथा बिना उपचार का गंदा पानी डालना रोकना चाहिए। जल का अनावश्यक दोहन और अपव्यय कम करके वर्षाजल का संचयन करना चाहिए। नदी-तटों को अतिक्रमण से बचाना तथा लोगों को वन और नदी के संबंध के प्रति जागरूक करना भी आवश्यक है, ताकि संरक्षण दैनिक व्यवहार का हिस्सा बने।

चरण 3: निष्कर्ष वृक्षों की कटाई रोकना, नए पौधे लगाकर उनकी रक्षा करना, नदियों को प्रदूषण और अतिक्रमण से बचाना तथा जल का विवेकपूर्ण उपयोग करना जरूरी है। जनभागीदारी से किए गए ये प्रयास वनों, नदियों और हमारे जीवन-स्रोत को सुरक्षित रखेंगे।

त्वरित सुझाव: उपायों को दो भागों में लिखिए: वन के लिए कटाई रोकना और वृक्षारोपण; नदी के लिए प्रदूषण रोकना और जल संरक्षण।

5(क). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

'यह देश एक है' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि 'भाषा की दीवार' से क्या तात्पर्य है। वह किनके बीच है और कैसे टूट सकती है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'भाषा की दीवार' एक लाक्षणिक अभिव्यक्ति है। इसका संबंध भाषाओं की भिन्नता के कारण लोगों के बीच उत्पन्न संवाद और समझ की बाधा से है।
- 'यह देश एक है' का मूल भाव भाषायी विविधता के भीतर भारतीयों की एकता को पहचानना है। भाषा-भेद को मनुष्यों के बीच स्थायी अलगाव का कारण नहीं बनने देना चाहिए।

चरण 1: अभिव्यक्ति का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए 'भाषा की दीवार' से तात्पर्य उस बाधा से है जो एक-दूसरे की भाषा न समझ पाने के कारण उत्पन्न होती है। इससे लोग अपनी बात सीधे नहीं कह पाते और दूसरे के विचारों तथा भावनाओं से परिचित नहीं हो पाते। यह ईंट-पत्थर की दीवार नहीं, परस्पर संप्रेषण की कठिनाई है, जो निकटता के मार्ग में आ खड़ी होती है।

चरण 2: बताइए कि यह दीवार किनके बीच है यह दीवार देश के अलग-अलग भाषाएँ बोलने वाले लोगों के बीच है। विभिन्न प्रदेशों, विशेषकर उत्तर और दक्षिण के भिन्न भाषाभाषी लोगों के बीच, एक-दूसरे की भाषा का अपरिचय संपर्क में कठिनाई पैदा करता है। वे एक ही देश के निवासी हैं, फिर भी भाषा न समझ पाने से एक-दूसरे को दूर का समझने लगते हैं।

चरण 3: दीवार टूटने का उपाय स्पष्ट कीजिए यह दीवार परस्पर प्रेम, सद्भाव और समझने की इच्छा से टूट सकती है। दूसरी भारतीय भाषाओं का सम्मान, उन्हें सीखने का प्रयास तथा विभिन्न प्रदेशों के लोगों से संपर्क संवाद को सहज बनाते हैं। अपनी भाषा के प्रति लगाव रखते हुए दूसरी भाषा को हीन न समझना जरूरी है। आत्मीयता होने पर भाषा की कठिनाई भी मनुष्यों के मिलन की स्थायी बाधा नहीं बनती।

चरण 4: निष्कर्ष 'भाषा की दीवार' विभिन्न भाषाभाषी भारतीयों के बीच संवाद की बाधा है। पारस्परिक सद्भाव, भाषाओं के सम्मान, उन्हें सीखने और संपर्क बढ़ाने से यह टूट सकती है तथा विविधता के भीतर देश की एकता का अनुभव हो सकता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में प्रश्न के तीन हिस्से अलग रखिए: दीवार का अर्थ, किनके बीच है और प्रेम तथा भाषा-परिचय से कैसे टूटेगी।

5(ख). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

'नीलू' के स्वभाव की तीन विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में प्राणी के व्यवहार से उसके स्वभाव की विशेषताएँ स्पष्ट की जाती हैं। 'नीलू' में पशु की संवेदनशीलता और मनुष्य से उसका आत्मीय संबंध उभरता है।
- तीन अलग विशेषताएँ बताते समय प्रत्येक का अर्थ भी स्पष्ट करना चाहिए, ताकि उत्तर केवल विशेषणों की सूची बनकर न रह जाए।

चरण 1: स्वामिभक्ति और आत्मीयता समझिए नीलू अत्यंत स्वामिभक्त और स्नेही था। लेखिका के प्रति उसके व्यवहार में अपनापन और निष्ठा थी। वह केवल भोजन और आश्रय पाने के लिए उनके पास रहने वाला पशु नहीं था; उसका उनसे भावात्मक संबंध था। अपने लोगों से लगाव और उनकी निकटता की इच्छा उसके संवेदनशील स्वभाव को व्यक्त करती है।

चरण 2: विनम्रता और अक्रोध समझिए नीलू का व्यवहार विनम्र था। उसके स्वभाव में अनावश्यक क्रोध और हिंसा का अभाव था। वह आत्मीय संबंध में सौम्यता बनाए रखता था। अपनी शक्ति या उपस्थिति से दूसरों को भयभीत करना उसके व्यक्तित्व की पहचान नहीं था। यह विनम्रता उसके स्वाभिमान के विरुद्ध नहीं थी; वह अपना मान रखते हुए भी शांत और उदार रह सकता था।

चरण 3: स्वाभिमान स्पष्ट कीजिए नीलू के स्वभाव में स्वाभिमान भी था। स्नेह पाने पर वह आत्मीयता प्रकट करता था, पर उसके

व्यवहार में अपनी गरिमा का बोध भी झलकता था। इस विशेषता से उसका स्वतंत्र व्यक्तित्व सामने आता है। वह निर्जीव वस्तु की तरह आज्ञापालन करने वाला प्राणी नहीं, अपनी संवेदना और मान रखने वाला जीव लगता है।

चरण 4: निष्कर्ष नीलू की तीन प्रमुख विशेषताएँ स्वामिभक्ति और स्नेह, विनम्रता और अक्रोध, तथा स्वाभिमान हैं। इन्हीं गुणों के कारण वह लेखिका के जीवन का आत्मीय साथी बन जाता है।

त्वरित सुझाव: नीलू के उत्तर में तीन अलग गुण लिखिए और हर गुण का आशय खोलिए; स्नेह तथा स्वामिभक्ति को अलग-अलग गिनकर एक ही बात न दोहराइए।

5(ग). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

'चित्र' पाठ के आधार पर बताइए कि कलाकार की कल्पना में आए मिलर मोर का चित्र ही क्यों बनवाना चाहते थे। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'चित्र' पाठ में मोर का चित्र केवल पक्षी की सुंदर आकृति नहीं है। मिलर की दृष्टि में वह साहित्य की मनोरमता और उसके प्रभाव का प्रतीक है।
- उत्तर में मोर के सौंदर्य तथा सच्चे साहित्य के आनंददायक और कल्याणकारी स्वरूप के बीच संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: मोर की मनोरमता समझिए मिलर साहित्य को मयूर जैसा मनोरम मानते थे। मोर अपने रंग-बिरंगे पंख फैलाकर जब नृत्य करता है तो देखने वालों का मन मोह लेता है। उसका रंग, रूप और नृत्य मिलकर दर्शक को आनंद देते हैं। इस प्रकार मोर का सौंदर्य मनुष्य की संवेदना को आकर्षित करने वाली कला के समान प्रतीत होता है।

चरण 2: साहित्य से तुलना कीजिए जिस प्रकार मोर का नृत्य मन को आनंदित करता है, उसी प्रकार सुंदर साहित्य भी पाठक को आनंद देता है। वह भावों, कल्पना और अभिव्यक्ति की सुंदरता से मन को प्रभावित करता है। मिलर के मन में मोर तथा साहित्य के बीच यही मनोरमता का संबंध था। इसलिए साहित्य के सौंदर्य को व्यक्त करने के लिए उन्हें मोर की छवि उपयुक्त लगती थी।

चरण 3: सच्चे साहित्य का व्यापक उद्देश्य बताइए मिलर की दृष्टि में सच्चा साहित्य जनता का केवल मनोरंजन नहीं करता। वह लोगों की बुराइयों को दूर करने में भी सहायक होता है और मनुष्य के आचरण को बेहतर बनाता है। अतः इस प्रसंग में साहित्य का आकर्षण उसके सामाजिक और नैतिक प्रभाव से जुड़ा है। उत्तर में आनंद के साथ यह सुधारकारी भूमिका भी स्पष्ट होनी चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष मिलर मोर का चित्र इसलिए बनवाना चाहते थे कि वे साहित्य को मोर के समान मनोरम मानते थे। मोर का नृत्य जैसे मन मोहता है, वैसे ही सच्चा साहित्य आनंद देता है और साथ ही जन-जन की बुराइयाँ दूर करता है।

त्वरित सुझाव: कारण लिखते समय मोर के रंगीन पंख और नृत्य को साहित्य की मनोरमता से जोड़िए; फिर सच्चे साहित्य की सुधारकारी भूमिका अवश्य बताइए।

5(घ). निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

ठूँठ और हरे-भरे वृक्ष को देखकर लेखक किस निष्कर्ष पर पहुँचा ? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ठूँठ और हरा-भरा वृक्ष जीवन की दो प्रवृत्तियों के प्रतीक हैं। उनकी बाहरी अवस्था के आधार पर लेखक जीवंतता और जड़ता का अंतर स्पष्ट करता है।
- जीवन में परिस्थितियों के साथ उचित सामंजस्य आवश्यक है, पर अपनी जड़ों और मूल्यों से जुड़ाव भी बना रहना चाहिए।

चरण 1: दोनों वृक्षों का अंतर देखिए हरे-भरे वृक्ष में जीवन है। उसकी डालियाँ और पत्तियाँ हवा के साथ हिलती-डुलती और झुकती हैं। इसके विपरीत ठूँठ सूखा, कठोर और निश्चल है। उसकी अकड़ को देखकर उसे अधिक शक्तिशाली मान लेना भूल होगी, क्योंकि उसमें जीवित वृक्ष जैसी सरसता और गति नहीं है। इस तुलना में लचक जीवन की पहचान बनती है।

चरण 2: मनुष्य के आचरण से संबंध जोड़िए लेखक समझता है कि मनुष्य को भी परिस्थितियों के अनुसार अपने व्यवहार में लचीलापन रखना चाहिए। हर बात पर अड़े रहना और किसी की बात न मानना दृढ़ता का प्रमाण नहीं है; ऐसी जड़ता विकास रोक देती है। दूसरों की उचित बात स्वीकार करना, मिल-जुलकर रहना और आवश्यक परिवर्तन करना जीवन को सक्रिय बनाए रखता है।

चरण 3: जड़ों की दृढ़ता का महत्त्व समझिए हरा वृक्ष हवा के साथ झुकता है, फिर भी अपनी जड़ों को धरती में दृढ़ रखता है। इसी प्रकार व्यवहार में नम्रता और अनुकूलन होने पर भी मनुष्य को अपने मूल आदर्श नहीं छोड़ने चाहिए। अतः लचीला होने का अर्थ सिद्धांतहीन हो जाना नहीं है। उचित दृढ़ता और उचित लचक के संतुलन से ही जीवन फलता-फूलता है।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि सूखी अकड़ जड़ता की, जबकि सरसता, गति और लचीलापन जीवन की पहचान हैं। मनुष्य को मूल्यों में दृढ़ रहकर व्यवहार में नम्र और परिस्थिति के अनुकूल बनना चाहिए।

त्वरित सुझाव: तुलना को तीन शब्दों से याद रखिए: ठूँठ की अकड़, शाखाओं की लचक और जड़ों की दृढ़ता; फिर इनका मनुष्य के जीवन से संबंध बताइए।

6(क). 'विविधा' भाग-2' के आधार पर निम्नलिखित किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

थाथवली गाँव की उस महिला का पहला नाम भुलाकर लोग उसे 'अरुमुगम की माँ' के नाम से क्यों जानने लगे ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस प्रसंग में माँ की नई पहचान उसके पुत्र अरुमुगम की देशभक्ति और बलिदान से जुड़ी है।
- लोगों के संबोधन में परिवर्तन माँ के प्रति सम्मान प्रकट करता है। उत्तर में पहले की पहचान, पुत्र का बलिदान और उसके बाद मिला सम्मान स्पष्ट होना चाहिए।

चरण 1: पहले की पहचान बताइए अरुमुगम के बलिदान से पहले थाथवली गाँव के लोग उसकी माँ को उसके अपने नाम से पुकारते थे। उस समय उसकी पहचान सामान्यतः उसके व्यक्तिगत नाम से ही थी। प्रश्न में नाम भुलाने की बात इसी पुरानी पहचान के स्थान पर एक नई, सम्मानपूर्ण पहचान स्थापित होने के अर्थ में आई है।

चरण 2: पहचान बदलने का कारण स्पष्ट कीजिए अरुमुगम ने देश की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। उसके इस बलिदान से लोग उसे देशभक्त और वीर के रूप में मानने लगे तथा उसकी वीरता का गुणगान करने लगे। इस सम्मान का संबंध उसकी माँ से भी जुड़ गया। वीर और बलिदानी पुत्र की माता होने के कारण लोग उस महिला को आदरपूर्वक 'अरुमुगम की माँ' कहकर पुकारने लगे।

चरण 3: निष्कर्ष अरुमुगम के देश की रक्षा में प्राण न्योछावर करने से उसकी माँ को विशेष सम्मान मिला। इसलिए लोगों ने उसके व्यक्तिगत नाम के स्थान पर उसे 'अरुमुगम की माँ' के रूप में जानना और पुकारना शुरू कर दिया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कारण की कड़ी स्पष्ट रखिए: अरुमुगम का देश के लिए बलिदान, उसकी वीरता का सम्मान और माँ को मिली नई पहचान।

6(ख). 'विविधा' भाग-2' के आधार पर निम्नलिखित किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

विष्णु दिगंबर पलुस्कर के गायन की विशेषता पर प्रकाश डालिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गायक की विशेषता में आवाज़ का स्वरूप, लय-ताल पर अधिकार और आलाप तथा तानों का प्रभाव देखा जाता है।
- पलुस्कर के गायन में मधुरता और गूँज का अद्भुत मेल था। उनकी स्वर-साधना संगीत को अत्यंत प्रभावशाली बनाती थी।

चरण 1: आवाज़ और संगीत पर अधिकार बताइए विष्णु दिगंबर पलुस्कर की आवाज़ मधुर होने के साथ अत्यंत गूँजदार थी। उसमें मिठास और शक्ति, दोनों का अद्भुत संगम था। लय और ताल पर उनका असाधारण अधिकार था। इस कारण उनका गायन सुरीला होने के साथ लयबद्ध तथा प्रभावपूर्ण होता था और सुनने वालों को मंत्रमुग्ध कर देता था।

चरण 2: आलाप और तानों का प्रभाव स्पष्ट कीजिए उनके आलाप गंभीर होते थे और तानें अत्यंत चमत्कारपूर्ण थीं। उनके गायन में कभी सिंह की दहाड़, कभी बिजली की कड़क और कभी बादल की गड़गड़ाहट जैसी ध्वनि का अनुभव होता था। पाठ में उनके स्वर की शक्ति का वर्णन इतना प्रभावशाली है कि उसे सुनकर धरती काँपती हुई प्रतीत होती थी। इन उपमाओं से उनकी आवाज़ की गूँज और तानों की विलक्षण क्षमता स्पष्ट होती है।

चरण 3: निष्कर्ष पलुस्कर के गायन की विशेषताएँ आवाज़ की मधुरता और प्रबल गूँज, लय-ताल पर असाधारण अधिकार, गंभीर आलाप तथा चमत्कारपूर्ण तानें थीं। उनका गायन श्रोताओं पर गहरा प्रभाव छोड़ता था।

त्वरित सुझाव: चार पक्ष याद रखिए: मधुर और गूँजदार आवाज़, लय-ताल, गंभीर आलाप तथा प्रभावशाली तानें; उत्तर में केवल मधुरता लिखकर न रुकिए।

6(ग). 'विविधा' भाग-2' के आधार पर निम्नलिखित किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

छावनी का पानी बंद करने का नोटिस क्यों देना पड़ा ? इससे टंडन जी के स्वभाव की कौनसी विशेषता झलकती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सार्वजनिक पद पर बैठे व्यक्ति का कर्तव्य नियमों को सब पर समान रूप से लागू करना है। अधिकार के साथ निष्पक्षता और उत्तरदायित्व जुड़े होते हैं।
- इस प्रसंग में पानी बंद करने का नोटिस देने का कारण और उससे प्रकट होने वाला स्वभाव, दोनों अलग-अलग स्पष्ट करने हैं।

चरण 1: नोटिस देने का कारण बताइए छावनी पर नगरपालिका के पानी का कर बकाया था। भुगतान की माँग किए जाने पर भी बकाया राशि नहीं चुकाई जा रही थी। इसलिए टंडन जी को निर्धारित समय में भुगतान न होने पर छावनी का पानी बंद करने का नोटिस देना पड़ा। सरकारी या सैनिक प्रतिष्ठान होने से छावनी को नगरपालिका का देय रोकने का अधिकार नहीं मिल जाता था।

चरण 2: टंडन जी का स्वभाव स्पष्ट कीजिए इस निर्णय से उनकी निर्भीकता, न्यायप्रियता और कर्तव्यनिष्ठा प्रकट होती है। उन्होंने प्रभावशाली अंग्रेज अधिकारियों के दबाव से डरकर नियमों को शिथिल नहीं किया। उनके लिए साधारण नागरिक और छावनी, दोनों पर समान नियम लागू थे। सार्वजनिक हित तथा नगरपालिका के अधिकार की रक्षा के लिए वे दृढ़तापूर्वक खड़े रहे।

चरण 3: निष्कर्ष पानी का बकाया कर न चुकाने के कारण छावनी को पानी बंद करने का नोटिस दिया गया। इससे टंडन जी का निर्भीक, निष्पक्ष और नियमों के प्रति दृढ़ स्वभाव सामने आता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर का क्रम रखिए: बकाया कर, भुगतान न होना, नोटिस, फिर निर्भीक न्यायप्रियता; केवल गुण लिखने से घटना का कारण छूट जाएगा।

6(घ). 'विविधा' भाग-2' के आधार पर निम्नलिखित किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

'मूँगा गूँगा' गाँव छोड़कर क्यों चला गया ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गूँगा की पहचान उसकी तैराकी की कुशलता से बनी थी। अपनी इस विशेषता के कारण ही वह स्वयं को सार्थक समझता था।
- गाँव छोड़ने का कारण समझने के लिए उसकी अर्जित प्रतिष्ठा और अपनी घटती शक्ति के अनुभव के बीच संबंध स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: गूँगा की प्रतिष्ठा का आधार गूँगा तैराकी के लिए प्रसिद्ध था। लोग उसकी इसी योग्यता के कारण उसे जानते थे और उसके प्रशंसक थे। इसलिए तैरने की शक्ति उसके लिए केवल शारीरिक क्षमता नहीं, समाज में सम्मान पाने का आधार भी थी।

चरण 2: शक्ति घटने का अनुभव और बदनामी का भय एक डूबते लड़के को बचाते समय गूँगा ने अनुभव किया कि उसमें अब पहले जैसी शक्ति नहीं रही है। उसके मन में यह आशंका बैठ गई कि आगे वह अपनी अर्जित कीर्ति को बचा नहीं सकेगा। जिस कुशलता ने उसे सम्मान दिलाया था, उसमें कमी आने पर प्रतिष्ठा खोने का भय ही उसके गाँव छोड़ने का कारण बना।

चरण 3: निष्कर्ष गूँगा ने डूबते लड़के को बचाते समय अपनी शक्ति घटने का अनुभव किया। उसे लगा कि अब वह तैराकी से अर्जित अपनी कीर्ति नहीं बचा सकेगा; इसलिए बदनामी के डर से वह गाँव छोड़कर चला गया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में यह क्रम रखें: तैराकी की प्रसिद्धि, लड़के को बचाते समय घटती शक्ति का अनुभव और अर्जित कीर्ति खोने का भय।

---

7. रवींद्रनाथ ठाकुर ने भगिनी निवेदिता की सेवा को 'दिल की सेवा' क्यों कहा ? — पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'भगिनी निवेदिता' पाठ में सेवा का आधार मनुष्य के दुःख के प्रति आत्मीय करुणा और उसके निवारण के लिए समर्पण है।
- 'दिल की सेवा' का आशय ऐसी सेवा से है जिसमें सेवक सहायता पाने वाले लोगों को अपने परिवार के समान अपनाता है और अपने सुख-सुविधा की चिंता नहीं करता।

चरण 1: सेवा के पीछे का आत्मीय संबंध समझिए भगिनी निवेदिता ने भारत के साधारण, निर्धन और पीड़ित लोगों को पराया नहीं समझा। वे उनके दुःख से स्वयं दुखी होती थीं और उनके जीवन से गहरा संबंध जोड़कर उनकी सहायता करती थीं। उनके लिए सेवा बाहर से दिया जाने वाला उपकार नहीं थी। उसमें लोगों के प्रति आदर, अपनापन और उनके कष्ट को दूर करने की सच्ची व्याकुलता थी। इसी आत्मीयता के कारण रवींद्रनाथ ठाकुर को उनकी सेवा हृदय से निकली हुई दिखाई देती थी।

चरण 2: निःस्वार्थ समर्पण और कर्म का संबंध बताइए निवेदिता की करुणा केवल भावुकता या सहानुभूति व्यक्त करने तक सीमित नहीं थी। रोग और अभाव से जूझते लोगों के बीच पहुँचकर सहायता करना तथा अपने सुख और आराम का त्याग करना उनके जीवन का अंग था। कलकत्ता में प्लेग के समय उनका सेवाकार्य इसी सक्रिय करुणा को प्रकट करता है। वे सेवा को यश, प्रशंसा या निजी लाभ का साधन नहीं बनाती थीं। इस कार्य में उन्होंने अपने समय और शक्ति के साथ अपना समूचा मन लगाया।

चरण 3: ठाकुर के कथन का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए ठाकुर ने देखा कि निवेदिता और जनता के बीच दाता तथा याचक की दूरी नहीं थी। उनमें माँ के समान ममता और दूसरों के दुःख को अपना दुःख मानने की शक्ति थी। विदेशी होकर भी उन्होंने भारतीय जनता को हृदय से अपनाया। उनकी सेवा औपचारिक कर्तव्य-पालन से आगे बढ़कर जीवन का समर्पण बन गई थी। इसीलिए 'दिल की सेवा' कहना उनके प्रेम, त्याग, संवेदना और कर्मनिष्ठा को एक साथ रेखांकित करता है।

चरण 4: निष्कर्ष रवींद्रनाथ ठाकुर ने भगिनी निवेदिता की सेवा को 'दिल की सेवा' इसलिए कहा कि वह भारतीय जनता के प्रति गहरे प्रेम, मातृवत् ममता और निष्काम समर्पण से प्रेरित थी। वे पीड़ित लोगों को अपना मानकर उनके दुःख में सहभागी होती थीं और उसे दूर करने के लिए स्वयं कष्ट सहती थीं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में 'दिल' का अर्थ केवल दया न लिखें; आत्मीय अपनापन, निष्काम त्याग और उसे कर्म में बदलने का उदाहरण जोड़ें।

अथवा

7. 'सत्यकिरण' एकांकी के सभी पात्र अपने ऊपर किरण का प्रयोग करने से क्यों कतरा रहे थे ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'सत्यकिरण' एकांकी मनुष्य के बाहरी आचरण और भीतर छिपे वास्तविक विचारों के अंतर पर व्यंग्य करती है।
- सत्य को जानने की इच्छा और अपना सत्य प्रकट होने का भय अलग-अलग प्रवृत्तियाँ हैं; पात्रों का व्यवहार इसी विरोधाभास को सामने लाता है।

चरण 1: किरण के प्रयोग का प्रभाव स्पष्ट कीजिए सत्यकिरण का प्रयोग मनुष्य के भीतर छिपे सत्य को प्रकट कर सकता था। सामान्य व्यवहार में व्यक्ति अपने मन की हर बात नहीं बताता। वह अपने विचार, इच्छाएँ और उद्देश्य छिपाकर दूसरों के सामने अपनी सुविधानुसार छवि प्रस्तुत करता है। किरण के सामने इस प्रकार का छिपाव बनाए रखना संभव नहीं रहता। इसीलिए दूसरों पर उसका प्रयोग देखने की उत्सुकता रखने वाले पात्र भी अपने ऊपर प्रयोग की बात आने पर पीछे हटने लगते हैं।

चरण 2: पात्रों की झिझक का कारण बताइए सभी पात्रों को आशंका थी कि उनके मन में छिपी बातें सामने आ जाने पर उनका वास्तविक रूप दूसरों को मालूम हो जाएगा। वे अपने भीतर के स्वार्थ, कमजोरियों तथा कथनी और करनी के अंतर को उजागर नहीं करना चाहते थे। वे जैसी अच्छी छवि दूसरों के सामने बनाए रखना चाहते थे, उसके नष्ट हो जाने का डर उन्हें था। अपने रहस्य खुलने से लज्जित होने, सम्मान खोने और दूसरों के साथ संबंध बिगड़ने की संभावना उन्हें किरण से बचने के लिए प्रेरित करती थी।

चरण 3: एकांकी का व्यंग्य पहचानिए पात्र सत्य की चर्चा तो कर सकते थे, किंतु अपने ही जीवन का सत्य सबके सामने आने देने का साहस नहीं रखते थे। उनका कतराना दिखाता है कि दूसरों की वास्तविकता जानने की इच्छा जितनी प्रबल होती है, स्वयं को उसी कसौटी पर रखने की तैयारी उतनी नहीं होती। एकांकी इसी आत्मरक्षा और दोहरे आचरण को उजागर करती है। प्रयोग से बचने की प्रवृत्ति उनके मन में छिपे सत्य के प्रति भय को व्यक्त करती है।

चरण 4: निष्कर्ष 'सत्यकिरण' के सभी पात्र अपने ऊपर किरण का प्रयोग कराने से इसलिए कतरा रहे थे कि उससे उनके छिपे विचार, स्वार्थ और कमजोरियाँ प्रकट हो सकती थीं। अपनी बनाई हुई प्रतिष्ठा खोने और वास्तविक रूप उजागर होने का भय उनके संकोच का मूल कारण था।

त्वरित सुझाव: कारण लिखते समय क्रम रखें: किरण से भीतरी सत्य खुलना, उससे अपनी छवि को खतरा और इसी कारण प्रयोग से बचना।

8(क). 'विराटा की पद्मिनी' के आधार पर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :
लोचन सिंह कौन था ? वह देवीसिंह से नाराज़ होकर क्यों चला गया ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पात्र का परिचय उसके पद, स्वभाव और कार्यों से स्पष्ट होता है। लोचन सिंह का प्रसंग स्वामिभक्ति तथा स्वाभिमान के टकराव को सामने लाता है।
- उसके चले जाने का कारण बताते समय अंतिम युद्ध के बाद देवीसिंह के व्यवहार और उसके प्रति लोचन सिंह की प्रतिक्रिया को जोड़ना चाहिए।

चरण 1: लोचन सिंह का परिचय लोचन सिंह दलीपनगर का शूरवीर सेनापति था। वह निडर, स्पष्टवादी और स्वाभिमानी था। युद्ध में साहस दिखाने के साथ वह राजा के सामने भी अपनी बात निर्भीकता से कह देता था। उसकी उग्रता के कारण कभी-कभी उसका व्यवहार असंयत हो जाता था, किंतु वह अपने साहस और सेवाओं का अपमान सहन करने वाला व्यक्ति नहीं था।

चरण 2: नाराज़ होकर चले जाने का कारण अंतिम संघर्ष में देवीसिंह और अलीमर्दान के बीच युद्ध रोकने की स्थिति बनी। उसी समय नवाब के एक सरदार की अपमानजनक बात पर लोचन सिंह ने उसे मार दिया। देवीसिंह ने इससे क्रुद्ध होकर लोचन सिंह को कठोर शब्दों में अपमानित किया, शांत न होने पर उसके विरुद्ध हथियार उठाने की चेतावनी दी और वहाँ से निकल जाने को कहा। लोचन सिंह को राजा

का यह निर्णय और व्यवहार कृतघ्न लगा। उसने सेनापति का पद त्याग दिया, अपना फेंटा फेंक दिया और वहाँ से चला गया।

चरण 3: निष्कर्ष लोचन सिंह दलीपनगर का वीर सेनापति था। देवीसिंह के अपमानपूर्ण व्यवहार तथा अपनी सेवाओं के अनादर से क्षुब्ध होकर उसने पद छोड़ दिया और राज्य से चला गया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले लोचन सिंह का पद लिखिए, फिर राजा की फटकार और सेनापति-पद त्यागने का कारण स्पष्ट कीजिए।

8(ख). 'विराटा की पद्मिनी' के आधार पर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

दांगी कन्या कुमुद के बारे में दुर्गा का अवतार होने की बात क्यों फैली ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस प्रसंग में कुमुद के जन्म, असाधारण सौंदर्य और उसके पिता की धार्मिक आस्था से बने लोकविश्वास का कारण समझाना है।
- लोगों ने कुमुद को देवी का अवतार माना था; उत्तर में इस मान्यता के बनने की प्रक्रिया बतानी चाहिए।

चरण 1: पारिवारिक आस्था और जन्म के संकेत कुमुद के पिता नरपति सिंह दांगी दुर्गा के भक्त थे। कुमुद के जन्म से पहले, गर्भावस्था में उसकी माँ को विचित्र स्वप्न दिखाई देते थे। पुत्री के जन्म पर नरपति सिंह को अनुभव हुआ कि उनके घर कोई प्रकाश-पुंज जन्मा है। उनकी गहरी धार्मिक आस्था के कारण इन अनुभवों को साधारण घटना के स्थान पर देवी से जुड़ा संकेत समझा गया।

चरण 2: सौंदर्य और जनश्रद्धा का विस्तार कुमुद अत्यंत सुंदर थी। आयु बढ़ने के साथ उसका सौंदर्य और अधिक निखरता गया। लोगों को उसका रूप इतना असाधारण लगा कि वे उसमें दिव्यता देखने लगे। पिता की दुर्गा-भक्ति, जन्म से जुड़े विश्वास और कन्या के अनुपम रूप ने मिलकर यह धारणा दृढ़ की कि नरपति के घर दुर्गा ने अवतार लिया है। उसका यश गाँव के बाहर भी फैला और लोग श्रद्धा से उसके दर्शन के लिए आने लगे। इस प्रकार व्यक्तिगत विश्वास सामूहिक मान्यता बन गया। लोग उसके रूप और व्यक्तित्व को अपनी धार्मिक श्रद्धा से जोड़कर देखने लगे।

चरण 3: निष्कर्ष माता के विचित्र स्वप्न, जन्म के समय पिता को हुआ प्रकाश-पुंज का अनुभव, नरपति की दुर्गा-भक्ति और कुमुद के अनुपम सौंदर्य के कारण उसके दुर्गा का अवतार होने की बात फैली।

त्वरित सुझाव: कारणों का क्रम रखिए: माता के स्वप्न, पिता का अनुभव, दुर्गा-भक्ति और कुमुद का असाधारण सौंदर्य।

8(ग). 'विराटा की पद्मिनी' के आधार पर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

दलीपनगर और कालपी की टुकड़ियों में झड़प क्यों हुई ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथानक में झड़प का कारण समझाने के लिए घटना, उससे बनी धारणा और उस धारणा पर हुई प्रतिक्रिया को क्रम में रखना आवश्यक है।
- धार्मिक अपमान की सूचना पर क्रोध और अधैर्य से लिया गया निर्णय छोटे विवाद को सैन्य संघर्ष में बदल देता है।

चरण 1: मंदिर के विवाद की पृष्ठभूमि पालर के मंदिर पर कालपी के सैनिकों की उपस्थिति और उनके व्यवहार को लेकर विवाद हुआ। लोचन सिंह तथा वहाँ मौजूद लोगों ने उनके व्यवहार को अपमानजनक समझा। भीड़ और सैनिकों के जुट जाने से उत्तेजना बढ़ गई। वास्तविक स्थिति को शांत भाव से समझने के स्थान पर लोगों में यह विश्वास फैल गया कि देवी और धर्म का अपमान हुआ है। इसी तनाव ने दोनों पक्षों को टकराव की ओर बढ़ाया।

चरण 2: राजा की जल्दबाजी और संघर्ष दलीपनगर के राजा को सूचना मिली कि कालपी की मुसलमान सेना ने हिंदू देवी का अपमान

किया है। इस समाचार से वह क्रोधित हो उठा। उसने धैर्यपूर्वक घटना की जाँच करने और शांतिपूर्ण समाधान खोजने के बजाय जल्दबाजी में आक्रमण का आदेश दे दिया। राजा के क्रोध तथा सैनिकों की उत्तेजना के कारण विवाद दबने के बजाय बढ़ा और दलीपनगर तथा कालपी की टुकड़ियों में झड़प हो गई। इस प्रसंग में अधूरी समझ के साथ किया गया तत्काल प्रतिकार संघर्ष का प्रमुख कारण है।

चरण 3: निष्कर्ष देवी के अपमान की सूचना से उत्पन्न उत्तेजना तथा दलीपनगर के राजा के क्रोध, अधैर्य और जल्दबाजी में दिए गए आक्रमण के आदेश के कारण दोनों टुकड़ियाँ भिड़ गईं।

त्वरित सुझाव: केवल धार्मिक विवाद लिखकर न रुकिए; अपमान की सूचना से राजा के क्रोध और आक्रमण के आदेश तक का संबंध बताइए।

9. कुंजर सिंह के चरित्र की चार प्रमुख विशेषताओं का प्रकाश डालिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में प्रत्येक विशेषता को पात्र की स्थिति, व्यवहार अथवा किसी प्रसंग से स्पष्ट करना चाहिए। केवल गुणों की सूची पर्याप्त नहीं होती।
- कुंजर सिंह के व्यक्तित्व में वीरता और प्रेम के साथ जन्मगत उपेक्षा की पीड़ा तथा आंतरिक द्वंद्व भी दिखाई देता है।

चरण 1: वीरता और साहस कुंजर सिंह उपन्यास का प्रमुख नायक है। वह बलशाली, वीर और संकट में साहस दिखाने वाला युवक है। युद्ध की विपरीत परिस्थितियाँ उसे निष्क्रिय नहीं करतीं। विराटा की रक्षा के संघर्ष में वह तोपों का संचालन करता है और अंतिम समय तक लड़ता है। उसके साहस में कठिन परिस्थिति का सामना करने तथा अपने प्राणों को संकट में डालने की क्षमता दिखाई देती है।

चरण 2: आदर्श प्रेमी कुमुद के प्रति उसका प्रेम गहरा और समर्पणपूर्ण है। वह उसके सौंदर्य से आकर्षित होता है, किंतु संबंध केवल बाहरी आकर्षण तक सीमित नहीं रहता। कुमुद की रक्षा, उसकी इच्छा और उसके सम्मान का प्रश्न उसके लिए महत्त्वपूर्ण बन जाता है। संकट के समय भी कुमुद के साथ उसका आत्मीय संबंध बना रहता है। प्रेम उसके जीवन को उद्देश्य और भावनात्मक आधार देता है।

चरण 3: दासी-पुत्र होने की कचोट राजा नायकसिंह का पुत्र होते हुए भी दासी-पुत्र होने के कारण उसे उत्तराधिकार का मान्य अधिकार नहीं मिलता। यह स्थिति उसके आत्मसम्मान को बार-बार चोट पहुँचाती है। राजपरिवार से संबंध होने और उचित मान्यता न मिलने का विरोध उसे भीतर से पीड़ित करता है। इसलिए उसके चरित्र में उपेक्षा की वेदना और अपने स्थान को लेकर असंतोष दिखाई देता है।

चरण 4: आंतरिक द्वंद्व और संघर्ष वह अपने व्यक्तित्व की दुर्बलताओं, आहत अभिमान और उदात्त भावनाओं के बीच संघर्ष करता रहता है। एक ओर कुमुद का प्रेम तथा वीरता है, दूसरी ओर अधिकार-वंचना से उत्पन्न क्षोभ है। देवीसिंह के प्रति उसका अंतिम आक्रोश इसी कसक को प्रकट करता है। इस द्वंद्व के कारण वह केवल गुणों की प्रतिमा नहीं, बल्कि संवेदनशील और जटिल मन वाला पात्र बनता है।

चरण 5: निष्कर्ष कुंजर सिंह की चार प्रमुख विशेषताएँ हैं: वीरता, समर्पणपूर्ण प्रेम, दासी-पुत्र होने की पीड़ा और निरंतर आंतरिक संघर्ष। इनसे उसका नायकत्व प्रभावशाली तथा मानवीय बनता है।

त्वरित सुझाव: चार विशेषताओं को अलग-अलग लिखिए और प्रत्येक के साथ पात्र की स्थिति या घटना का छोटा आधार अवश्य जोड़िए।

अथवा

9. 'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपन्यास का उद्देश्य उसके कथानक, पात्रों के आचरण और उनके संघर्ष से व्यक्त जीवन-संदेश को समझकर बताया जाता है।
- वृंदावनलाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यास में बुंदेलखंड की पृष्ठभूमि के माध्यम से शौर्य, नारी-गरिमा तथा सामंती स्वार्थ के परिणाम

सामने आते हैं।

चरण 1: नारी के आत्मसम्मान को समझें उपन्यास की केंद्रीय नारी कुमुद का रूप मात्र आकर्षण का विषय नहीं है। उसके व्यक्तित्व में आत्मसम्मान, मर्यादा और साहस भी हैं। उसके जीवन के संघर्ष के द्वारा लेखक नारी को शासकों की इच्छा की वस्तु मानने वाली दृष्टि का विरोध करता है। नारी के सम्मान की रक्षा को व्यक्तिगत प्रतिष्ठा से आगे बढ़कर एक नैतिक दायित्व के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

चरण 2: सामंती व्यवस्था की आलोचना पहचानें रूपलिप्सा, सत्ता की लालसा तथा व्यक्तिगत स्वार्थ से प्रेरित संघर्ष उपन्यास में विनाश का कारण बनते हैं। शासकों के लिए अपनी प्रजा और राज्य के हित से ऊपर निजी अभिलाषा का होना उनके नैतिक पतन को प्रकट करता है। लेखक ऐसे वातावरण का चित्रण करके संकेत करता है कि कर्तव्यहीन नेतृत्व समाज को असुरक्षित बनाता है और परस्पर संघर्ष सामूहिक शक्ति को नष्ट करता है।

चरण 3: वीरता और निष्ठा के आदर्श स्पष्ट करें कुंजर सिंह जैसे पात्र के शौर्य और निष्ठा के माध्यम से लेखक साहस, वचनपालन और मर्यादा-रक्षा की प्रेरणा देता है। इस प्रकार वीरता का मूल्य केवल युद्ध करने में नहीं, बल्कि अन्याय के सामने दृढ़ रहने और अपने दायित्व निभाने में है। ऐतिहासिक कथा पाठक में अपनी सांस्कृतिक परंपरा के प्रति गौरव जगाती है तथा व्यक्तिगत स्वार्थ के स्थान पर व्यापक हित की चेतना उत्पन्न करती है।

चरण 4: निष्कर्ष 'विराटा की पद्मिनी' का उद्देश्य नारी के सम्मान, वीरता और कर्तव्यनिष्ठा की प्रतिष्ठा करना तथा सामंती विलासिता, स्वार्थ और आपसी फूट के विनाशकारी परिणामों के प्रति सचेत करना है।

त्वरित सुझाव: उद्देश्य लिखते समय कुमुद के आत्मसम्मान, कुंजर सिंह की निष्ठा और सामंती स्वार्थ के परिणाम को अलग-अलग आधार बनाइए।

---

10. रेखांकित पदों का व्याकरणिक परिचय दीजिए :

उसने कबूतर का चित्र बना दिया। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संज्ञा का पद-परिचय देते समय उसका भेद, लिंग, वचन और वाक्य में कारक-संबंध बताया जाता है।
- पद का कारक केवल उसके अर्थ से नहीं, पूरे वाक्य में उसके संबंध तथा उसके साथ प्रयुक्त परसर्ग से पहचाना जाता है।

चरण 1: कबूतर का पद-परिचय दें 'कबूतर' जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग और एकवचन है। यहाँ यह किसी विशेष नाम वाले पक्षी का व्यक्तिवाचक नाम नहीं, पक्षी की जाति का बोध कराने वाला शब्द है। इसके बाद 'का' परसर्ग आया है। 'कबूतर का चित्र' में कबूतर का संबंध चित्र से व्यक्त होता है, इसलिए यहाँ संबंध कारक है। 'किसका चित्र?' पूछने पर 'कबूतर का' उत्तर मिलता है।

चरण 2: चित्र का पद-परिचय दें 'चित्र' जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन और कर्म कारक है। 'उसने क्या बना दिया?' का उत्तर 'चित्र' है, अत: यह 'बना दिया' क्रिया का कर्म है। इसके साथ 'को' परसर्ग व्यक्त नहीं हुआ है; फिर भी वाक्य में कर्म का कार्य करने के कारण इसका कर्म कारक होना स्पष्ट है। 'दिया' का पुल्लिंग एकवचन रूप भी यहाँ चित्र के अनुरूप है।

चरण 3: दोनों पदों का संबंध जाँचें वाक्य में बनाने का कार्य करने वाला कर्ता 'उसने' है। बनाई जाने वाली वस्तु 'चित्र' है, जबकि 'कबूतर का' उस चित्र का संबंध बताता है। इसलिए दोनों संज्ञाओं को कर्म कहना उचित नहीं होगा। एक ही संज्ञा-समूह में आने पर भी कबूतर और चित्र की व्याकरणिक भूमिकाएँ अलग हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कबूतर : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, संबंध कारक। चित्र : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक।

त्वरित सुझाव: 'किसका चित्र?' से कबूतर का संबंध कारक और 'क्या बना दिया?' से चित्र का कर्म कारक पहचानिए।

11(क). निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए :

जो भी तुम पिलाओ। (कर्मवाच्य में) [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती है और कर्ता के साथ द्वारा अथवा से लगाया जाता है।
- वाच्य बदलते समय मूल क्रिया का अर्थ और वाक्य का भाव सुरक्षित रखा जाता है।

चरण 1: कर्ता और क्रिया पहचानें मूल वाक्य में 'तुम' कर्ता है और 'पिलाओ' पिलाने की क्रिया है। 'जो भी' उस वस्तु की ओर संकेत करता है जिसे पिलाया जाना है। वाक्य किसी निश्चित पेय का नाम नहीं देता, इसलिए परिवर्तन में भी नया पेय नहीं जोड़ना चाहिए।

चरण 2: कर्मप्रधान क्रियारूप बनाएँ कर्ता 'तुम' को 'तुम्हारे द्वारा' किया जाएगा। 'पिलाओ' के लिए कर्मवाच्य का रूप 'पिलाया जाए' बनेगा। 'जो भी' को बनाए रखने से मूल वाक्य का अनिश्चित वस्तु-संबंध और आशय सुरक्षित रहता है।

चरण 3: निष्कर्ष जो भी तुम्हारे द्वारा पिलाया जाए।

त्वरित सुझाव: 'तुम' के स्थान पर 'तुम्हारे द्वारा' रखिए और 'पिलाओ' को 'पिलाया जाए' में बदलिए।

11(ख). निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए :

शत्रु को रास्ते से हटा दिया गया। (कर्तृवाच्य में) [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कर्तृवाच्य में कार्य करने वाले कर्ता को प्रमुख बनाया जाता है।
- कर्मवाच्य की सहायक क्रिया हटाकर मूल क्रिया का उपयुक्त कर्तृवाच्य रूप लिया जाता है।

चरण 1: कर्मवाच्य की रचना पहचानें मूल वाक्य में 'शत्रु को' कर्म है। 'हटा दिया गया' कर्मवाच्य का भूतकालिक क्रियारूप है। हटाने वाला कर्ता स्पष्ट नहीं किया गया है। इसलिए उसका कोई निश्चित नाम जोड़ने के बजाय अनिश्चित कर्ता 'किसी ने' लेना उचित है।

चरण 2: कर्ता के अनुसार रचना करें वाक्य में 'किसी ने' कर्ता रखकर 'हटा दिया गया' को 'हटा दिया' करेंगे। 'शत्रु को' और 'रास्ते से' अपने मूल रूप में रहेंगे। इससे कार्य का पूरा हो जाना और मूल भूतकालिक अर्थ दोनों सुरक्षित रहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष किसी ने शत्रु को रास्ते से हटा दिया।

त्वरित सुझाव: कर्ता न दिया हो तो 'किसी ने' का प्रयोग करें; 'हटा दिया गया' में से 'गया' हटाने पर कर्तृवाच्य रूप मिलेगा।

11(ग). निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए :

वह हँसा नहीं। (भाववाच्य में) [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाववाच्य में अकर्मक क्रिया के भाव की प्रधानता होती है।
- भाववाच्य की क्रिया सामान्यत: पुल्लिंग, एकवचन, अन्यपुरुष में रहती है और कर्ता के साथ से आता है।

चरण 1: अकर्मक क्रिया पहचानें 'वह हँसा नहीं' में 'हँसना' अकर्मक क्रिया है; इसमें किसी कर्म की आवश्यकता नहीं है। 'वह' कर्ता है। माँगा गया परिवर्तन भाववाच्य का है, इसलिए कोई नया कर्म जोड़ने के बजाय हँसने की क्रिया के भाव को प्रमुख बनाना होगा।

चरण 2: भावप्रधान रचना बनाएँ 'वह' का रूप 'उससे' होगा और भूतकाल में क्रिया 'हँसा गया' बनेगी। मूल वाक्य का निषेध 'नहीं' बनाए रखेंगे। इस प्रकार वाक्य की रचना में कर्ता के स्थान पर क्रिया का भाव प्रमुख हो जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष उससे हँसा नहीं गया।

त्वरित सुझाव: अकर्मक 'हँसना' का भाववाच्य बनाते समय 'वह' को 'उससे' और क्रिया को 'हँसा नहीं गया' कीजिए।

12(क). किन्हीं दो पदों का विग्रह कर समास का नाम लिखिए :

रिश्ते-नाते, जलप्रदूषण, नीलकमल। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समास-विग्रह में समस्त पद के दोनों घटकों का पारस्परिक संबंध स्पष्ट किया जाता है।
- दोनों पद समान रूप से प्रधान हों तो द्वंद्व; कारक-चिह्न का लोप हो तो तत्पुरुष; विशेषण-विशेष्य संबंध हो तो कर्मधारय समास होता है।

चरण 1: रिश्ते-नाते का विग्रह करें रिश्ते-नाते का विग्रह है 'रिश्ते और नाते'। दोनों पद समान रूप से प्रधान हैं और उनके बीच 'और' संयोजक लुप्त है। इसलिए यह द्वंद्व समास है। यहाँ किसी एक पद को दूसरे की विशेषता बताने वाला नहीं माना जाता।

चरण 2: जलप्रदूषण का विग्रह करें जलप्रदूषण का विग्रह है 'जल का प्रदूषण'। इसमें संबंध कारक का चिह्न 'का' लुप्त है और उत्तरपद 'प्रदूषण' प्रधान है। अतः यह संबंध तत्पुरुष अथवा षष्ठी तत्पुरुष समास है। यह विग्रह प्रदूषण का संबंध जल से स्पष्ट करता है।

चरण 3: नीलकमल का विग्रह करें नीलकमल का विग्रह है 'नीला कमल'। 'नील' रंग बताने वाला विशेषण है और 'कमल' विशेष्य है। दोनों पद उसी कमल के बारे में बताते हैं, किसी तीसरे व्यक्ति अथवा वस्तु के बारे में नहीं। इसलिए यह कर्मधारय समास है, बहुव्रीहि नहीं।

चरण 4: निष्कर्ष रिश्ते-नाते : रिश्ते और नाते, द्वंद्व समास। जलप्रदूषण : जल का प्रदूषण, संबंध तत्पुरुष समास। नीलकमल : नीला कमल, कर्मधारय समास।

त्वरित सुझाव: विग्रह में 'और' आए तो द्वंद्व, 'का' लुप्त मिले तो संबंध तत्पुरुष और रंग तथा वस्तु का संबंध हो तो कर्मधारय पहचानिए।

12(ख). किन्हीं दो पद-समूह से समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए :

शक्ति के अनुसार, घरों में चलते हैं जो उद्योग, नाच का गाना। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समस्त पद बनाते समय पद-समूह का अर्थ सुरक्षित रखा जाता है। विभक्ति अथवा संबंध बताने वाले शब्द का लोप समास का भेद पहचानने में सहायता करता है।
- अव्ययीभाव में अव्यय प्रधान होता है; तत्पुरुष में उत्तरपद प्रधान होता है और दोनों पदों के बीच का कारक-संबंध लुप्त रहता है।

चरण 1: अनुसार का अर्थ पहचानिए शक्ति के अनुसार में अपनी सामर्थ्य के अनुरूप होने का भाव है। इसमें यथा का अर्थ अनुसार है। यथा और शक्ति को मिलाने पर यथाशक्ति बनता है। पूरा पद अव्यय की तरह प्रयुक्त होता है, इसलिए इसका समास अव्ययीभाव है।

चरण 2: उद्योग का स्थान-संबंध पहचानिए घरों में चलते हैं जो उद्योग का संक्षिप्त समस्त पद गृहउद्योग है। यहाँ उद्योग प्रधान पद है और गृह उसके चलने का स्थान बताता है। घरों में का अधिकरण-संबंध छिपा है; अतः यह अधिकरण तत्पुरुष, अर्थात् सप्तमी तत्पुरुष समास है।

चरण 3: नाच और गाने का दिया गया संबंध रखिए नाच का गाना से नाचगाना बनता है। प्रश्न में का के द्वारा संबंध दिया गया है, इसलिए इस विग्रह के अनुसार यह संबंध तत्पुरुष, अर्थात् षष्ठी तत्पुरुष समास है। यदि विग्रह नाच और गाना होता, तो द्वंद्व होता; यहाँ दिया हुआ विग्रह ही वर्गीकरण का आधार है।

चरण 4: निष्कर्ष शक्ति के अनुसार: यथाशक्ति — अव्ययीभाव। घरों में चलते हैं जो उद्योग: गृहउद्योग — अधिकरण तत्पुरुष। नाच का गाना: नाचगाना — संबंध तत्पुरुष।

त्वरित सुझाव: समास का नाम केवल परिचित शब्द देखकर न लिखें; यहाँ अनुसार, में और का से क्रमशः अव्ययीभाव, अधिकरण तत्पुरुष और संबंध तत्पुरुष पहचानें।

13(क). निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :

हम हमारी ज़मीन को पहचानें। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जब वाक्य का कर्ता अपने ही किसी संबंध या अधिकार का उल्लेख करता है, तब अपना, अपनी या अपने का प्रयोग होता है।
- अपना का रूप उस वस्तु के लिंग और वचन के अनुसार बदलता है जिसके साथ उसका संबंध बताया गया हो।

चरण 1: सर्वनाम का संबंध पहचानिए वाक्य में कर्ता हम है। ज़मीन भी उसी कर्ता से संबंधित है। इसलिए हम हमारी में प्रयुक्त हमारी के स्थान पर आत्मवाचक संबंधसूचक रूप लेना उचित है। इससे अपनी ही ज़मीन को पहचानने का अर्थ स्पष्ट होता है।

चरण 2: लिंग के अनुसार रूप चुनिए ज़मीन स्त्रीलिंग एकवचन संज्ञा है। अतः उसके साथ अपना का स्त्रीलिंग रूप अपनी लगेगा। पहचानें क्रिया कर्ता हम के अनुरूप है, इसलिए उसे बदलने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष शुद्ध वाक्य: हम अपनी ज़मीन को पहचानें।

त्वरित सुझाव: हम के बाद उसी कर्ता की ज़मीन का उल्लेख हो तो अपनी लिखें; अपना का लिंग ज़मीन से मिलाएँ, हम से नहीं।

13(ख). निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :

स्वाति, चित्रा और नीलिमा खेल रहे हैं। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हिंदी में सामान्य वर्तमान अपूर्ण क्रिया का रूप कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार बदलता है।
- एक से अधिक स्त्रीलिंग कर्ताओं के लिए रही हैं प्रयुक्त होता है; रहे हैं पुल्लिंग बहुवचन रूप है।

चरण 1: संयुक्त कर्ता पहचानिए स्वाति, चित्रा और नीलिमा तीन स्त्रीलिंग नाम हैं। और से जुड़कर ये बहुवचन कर्ता बनाते हैं। इसलिए क्रिया में स्त्रीलिंग और बहुवचन दोनों का ध्यान रखना आवश्यक है।

चरण 2: क्रिया का लिंग सुधारिए मूल वाक्य में खेल रहे हैं का रहे पुल्लिंग रूप है। सभी कर्ता स्त्रीलिंग होने के कारण यहाँ रही होना चाहिए। बहुवचन को व्यक्त करने वाला हैं पहले से सही है और उसे बनाए रखा जाएगा।

चरण 3: निष्कर्ष शुद्ध वाक्य: स्वाति, चित्रा और नीलिमा खेल रही हैं।

त्वरित सुझाव: तीनों नामों का लिंग पहचानकर रहे को रही करें; कर्ता एक से अधिक हैं, इसलिए सहायक क्रिया हैं रहने दें।

13(ग). निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :

सप्रसंग सहित व्याख्या कर सकते हो ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वाक्य में एक ही अर्थ की अनावश्यक पुनरावृत्ति शुद्ध और संक्षिप्त अभिव्यक्ति में बाधा डालती है।
- सप्रसंग का अर्थ प्रसंग सहित है। अतः इसके साथ फिर से सहित लगाने पर वही अर्थ दोहराया जाता है।

चरण 1: दोहराए गए अर्थ को पहचानिए सप्रसंग शब्द में स का अर्थ साथ या सहित है। इसलिए सप्रसंग सहित में प्रसंग के साथ होने का भाव दो बार आ रहा है। अशुद्धि व्याख्या या क्रिया में नहीं, इस अनावश्यक पुनरुक्ति में है।

चरण 2: अनावश्यक शब्द हटाइए सप्रसंग को बनाए रखते हुए सहित हटा दें। इससे प्रसंग के साथ व्याख्या करने का मूल आशय सुरक्षित रहता है। प्रश्नवाचक रूप और कर सकते हो को बदलने की आवश्यकता नहीं है। प्रसंग सहित भी शुद्ध पद-समूह है।

चरण 3: निष्कर्ष शुद्ध वाक्य: सप्रसंग व्याख्या कर सकते हो? अथवा: प्रसंग सहित व्याख्या कर सकते हो?

त्वरित सुझाव: सप्रसंग को मन में प्रसंग सहित खोलकर पढ़ें; तब उसके बाद आया अतिरिक्त सहित तुरंत पहचान में आ जाएगा।

14(क). निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

सर्दियों में लूसी ने दो बच्चों को जन्म देकर अपनी वंश-वृद्धि की। (संयुक्त वाक्य में बदलिए) [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संयुक्त वाक्य में दो या अधिक स्वतंत्र उपवाक्य समुच्चयबोधक शब्द से जुड़े होते हैं।
- पूर्वकालिक क्रिया जन्म देकर को स्वतंत्र समापिका क्रिया में बदलने से दो घटनाओं को अलग-अलग उपवाक्यों में रखा जा सकता है।

चरण 1: दो क्रियाएँ अलग कीजिए वाक्य में लूसी ने पहले दो बच्चों को जन्म दिया और उससे उसकी वंश-वृद्धि हुई। जन्म देकर को जन्म दिया में बदलें। दूसरे उपवाक्य में मूल क्रिया अपनी वंश-वृद्धि की बनी रहेगी।

चरण 2: स्वतंत्र उपवाक्य जोड़िए पहले उपवाक्य में सर्दियों में लूसी ने दो बच्चों को जन्म दिया और दूसरे में उसने अपनी वंश-वृद्धि की रखें। दोनों स्वतंत्र कथनों को और से जोड़ें। उसने का संबंध लूसी से है, इसलिए मूल कर्ता और घटना का अर्थ सुरक्षित है।

चरण 3: निष्कर्ष संयुक्त वाक्य: सर्दियों में लूसी ने दो बच्चों को जन्म दिया और उसने अपनी वंश-वृद्धि की।

त्वरित सुझाव: देकर को दिया बनाकर दूसरा स्वतंत्र कथन और से जोड़ें; दोनों उपवाक्यों में पूर्ण क्रिया अवश्य रखें।

14(ख). निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

भाषा-भेद की यह समस्या हमारी राष्ट्रीय एकता में सबसे बड़ी बाधा है। (मिश्र वाक्य में बदलिए) [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और कम-से-कम एक आश्रित उपवाक्य होता है।
- जो से शुरू होने वाला विशेषण उपवाक्य किसी संज्ञा का परिचय देता है; उसका संबंध मुख्य कथन के वह से जोड़ा जा सकता है।

चरण 1: विशेषण उपवाक्य बनाइए भाषा-भेद की यह समस्या को जो समस्या भाषा-भेद के कारण है के रूप में खोलें। यह जो वाला अंश समस्या का परिचय देता है और मुख्य कथन पर आश्रित है। इस प्रकार पद-समूह को उपवाक्य का रूप मिलता है।

चरण 2: प्रधान कथन सुरक्षित रखिए राष्ट्रीय एकता में सबसे बड़ी बाधा होने का कथन प्रधान उपवाक्य में रहेगा। वह से पहले बताए गए समस्या-पद का संकेत करें। सबसे बड़ी को बनाए रखना आवश्यक है, क्योंकि केवल बाधा लिखने से मूल कथन का बल घट जाएगा।

चरण 3: निष्कर्ष मिश्र वाक्य: जो समस्या भाषा-भेद के कारण है, वह हमारी राष्ट्रीय एकता में सबसे बड़ी बाधा है।

त्वरित सुझाव: जो समस्या से आश्रित अंश और वह हमारी से प्रधान अंश बनाइए; सबसे बड़ी बाधा का मूल भाव पूरा बनाए रखें।

14(ग). निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

क्या हमारी-तुम्हारी तरह इनमें जड़ें नहीं होतीं ? (अर्थ के अनुसार वाक्य-भेद लिखिए) [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अर्थ के आधार पर प्रश्न पूछने वाले वाक्य को प्रश्नवाचक या प्रश्नार्थक वाक्य कहते हैं।
- वाक्य-भेद तय करते समय पूरे कथन का प्रयोजन देखना चाहिए; केवल नहीं शब्द की उपस्थिति पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: पूरे वाक्य का भाव देखिए वाक्य क्या से आरंभ होता है और प्रश्नचिह्न पर समाप्त होता है। वक्ता पूछ रहा है कि इनमें हमारी-तुम्हारी तरह जड़ें होती हैं या नहीं। इस तरह वाक्य की प्रस्तुति प्रश्न के रूप में हुई है।

चरण 2: निषेध और प्रश्न में अंतर कीजिए नहीं शब्द प्रश्न के भीतर आया है। वक्ता सीधे यह घोषणा नहीं कर रहा कि इनमें जड़ें नहीं होतीं। इसलिए अकेले नहीं को देखकर इसे निषेधार्थक नहीं कहेंगे; यहाँ प्रमुख भाव प्रश्न का है।

चरण 3: निष्कर्ष अर्थ के अनुसार यह प्रश्नवाचक (प्रश्नार्थक) वाक्य है।

त्वरित सुझाव: क्या और प्रश्नचिह्न को पूरे कथन के साथ पढ़ें; प्रश्न के भीतर आया नहीं वाक्य का प्रश्नवाचक स्वरूप नहीं बदलता।

14(घ). निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

हमारे सामने उसका मुँह कैसे खुलेगा ? (निषेधार्थक वाक्य में बदलिए) [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निषेधार्थक वाक्य में किसी कार्य या स्थिति का निषेध नहीं आदि शब्दों द्वारा किया जाता है।
- रूपांतरण करते समय वाक्य का मूल आशय सुरक्षित रखना चाहिए; प्रश्नात्मक अभिव्यक्ति का निहित भाव स्पष्ट कथन में रखा जा सकता है।

चरण 1: प्रश्न में छिपा आशय समझिए हमारे सामने उसका मुँह कैसे खुलेगा में कैसे के माध्यम से यह भाव व्यक्त किया गया है कि वह हमारे सामने बोल नहीं सकेगा। यहाँ मुँह खुलना बोलने का अर्थ देता है। इसे शाब्दिक शारीरिक क्रिया तक सीमित नहीं करना चाहिए।

चरण 2: नहीं लगाकर कथन बनाइए प्रश्नसूचक कैसे हटाएँ और क्रिया खुलेगा से पहले नहीं रखें। हमारे सामने और उसका मुँह मूल क्रम में रखे जा सकते हैं। अंत में प्रश्नचिह्न के स्थान पर पूर्ण विराम आएगा, क्योंकि अब निषेध सीधे कहा जा रहा है।

चरण 3: निष्कर्ष निषेधार्थक वाक्य: हमारे सामने उसका मुँह नहीं खुलेगा।

त्वरित सुझाव: कैसे खुलेगा का निहित अर्थ नहीं खुलेगा है; कैसे हटाकर नहीं जोड़ें और प्रश्नचिह्न को पूर्ण विराम में बदलें।

15(क). वाक्य-विश्लेषण कीजिए :

मैं अपना देश कभी नहीं छोड़ूँगा। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वाक्य-विश्लेषण में उद्देश्य और विधेय अलग किए जाते हैं। उद्देश्य वह है जिसके विषय में कुछ कहा जाए, और विधेय उसके विषय में कही गई बात है।
- विधेय के भीतर कर्म, कर्म का विस्तार, क्रियाविशेषण, निषेधसूचक पद और क्रिया की भूमिका पहचानी जा सकती है।

चरण 1: उद्देश्य और विधेय अलग कीजिए वाक्य में कहने वाला अपने बारे में कथन कर रहा है, इसलिए उद्देश्य मैं है। मैं के बारे में अपना देश कभी नहीं छोड़ूँगा कहा गया है; अत: यह पूरा अंश विधेय है। उद्देश्य के साथ कोई अतिरिक्त विशेषण नहीं जुड़ा है, इसलिए उसका विस्तार नहीं है।

चरण 2: कर्म और उसके विस्तार को पहचानिए छोड़ूँगा क्रिया से क्या छोड़ूँगा पूछने पर अपना देश मिलता है। कर्म का मुख्य पद देश है और अपना उसका संबंध बताने वाला सार्वनामिक विशेषण अथवा कर्म का विस्तार है। इस प्रकार पूरा कर्म-पदबंध अपना देश है।

चरण 3: क्रिया तथा उसके विस्तार पहचानिए छोड़ूँगा मुख्य क्रिया है। इससे उत्तम पुरुष, एकवचन और सामान्य भविष्यत् काल का बोध होता है। कभी कालवाचक क्रियाविशेषण है और नहीं निषेधसूचक अव्यय है। कभी नहीं मिलकर किसी भी समय देश न छोड़ने का दृढ़ भाव व्यक्त करते हैं। वाक्य में एक ही स्वतंत्र समापिका क्रिया होने से रचना की दृष्टि से यह सरल वाक्य है।

चरण 4: निष्कर्ष उद्देश्य: मैं। विधेय: अपना देश कभी नहीं छोड़ूँगा। कर्म: देश; कर्म का विस्तार: अपना। कालवाचक क्रियाविशेषण: कभी; निषेधसूचक पद: नहीं; क्रिया: छोड़ूँगा। रचना से सरल और अर्थ से निषेधार्थक वाक्य।

त्वरित सुझाव: पहले मैं को उद्देश्य और शेष को विधेय अलग करें; फिर क्या छोड़ूँगा पूछकर कर्म तथा कभी नहीं से समय और निषेध पहचानें।

15(ख). एक संयुक्त वाक्य में संश्लेषण कीजिए :

यूनानियों ने पंजाब पर हमला किया।

उसे कंधार से मिलाया।

उनकी कोशिश बेकार हुई। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संयुक्त वाक्य में दो या अधिक स्वतंत्र उपवाक्य समुच्चयबोधक शब्दों से जुड़ते हैं। प्रत्येक उपवाक्य का कथन स्वतंत्र रूप से समझा जा सकता है।
- एक ही क्रम की घटनाओं को जोड़ने के लिए और तथा विपरीत परिणाम दिखाने के लिए किंतु का प्रयोग किया जाता है। संश्लेषण में मूल वाक्यों का आशय बना रहना चाहिए।

चरण 1: कथनों का संबंध पहचानिए पहले वाक्य में यूनानियों का पंजाब पर हमला करना बताया गया है। दूसरे में पंजाब को कंधार से मिलाने की बात है। इन दोनों क्रियाओं का कर्ता यूनानी हैं और दूसरे वाक्य का उसे शब्द पंजाब के लिए आया है। दोनों घटनाएँ एक ही घटनाक्रम से जुड़ी हैं।

चरण 2: उचित समुच्चयबोधक चुनिए पहले और दूसरे कथन को और से जोड़ा जाएगा। अंतिम कथन में उनकी कोशिश बेकार होने का परिणाम पहले दो कथनों की अपेक्षा के विपरीत है, इसलिए उसके पहले किंतु उपयुक्त है। क्रियाओं को स्वतंत्र उपवाक्यों में रखने से वाक्य संयुक्त रहेगा; हमला करके जैसे पद से पहला कथन गौण नहीं बनाया जाएगा।

चरण 3: निष्कर्ष यूनानियों ने पंजाब पर हमला किया और उसे कंधार से मिलाया, किंतु उनकी कोशिश बेकार हुई।

त्वरित सुझाव: पहले दो कथनों के योग के लिए और तथा अंतिम विरोधी परिणाम के लिए किंतु लगाकर सभी मूल आशय सुरक्षित रखिए।

16(क). निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों का वाक्य प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए :

आँच न आने देना [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आँच न आने देना मुहावरे का अर्थ किसी को हानि या संकट से बचाए रखना है।
- वाक्य में ऐसी परिस्थिति होनी चाहिए जिससे सुरक्षा का भाव स्वयं स्पष्ट हो; केवल मुहावरा लिखना पर्याप्त नहीं है।

चरण 1: लाक्षणिक अर्थ पहचानिए यहाँ आँच आग की गर्मी का शाब्दिक बोध नहीं कराती, बल्कि नुकसान या संकट का संकेत देती है। किसी की रक्षा करने के दृढ़ संकल्प या व्यवहार के प्रसंग में इस मुहावरे का प्रयोग उचित है।

चरण 2: सुरक्षा का प्रसंग चुनिए सीमा पर सैनिकों का कर्तव्य देश की रक्षा करना है। शत्रु के आक्रमण का उल्लेख और देश की रक्षा का संकल्प साथ रखने पर मुहावरे का आशय स्पष्ट हो जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष वाक्य-प्रयोग: शत्रु कितना भी प्रबल आक्रमण करे, हमारे वीर सैनिक देश की सुरक्षा पर आँच नहीं आने देंगे।

त्वरित सुझाव: प्रयोग में संकट और उससे रक्षा का प्रसंग जोड़िए, ताकि आँच का अर्थ हानि स्वतः स्पष्ट हो जाए।

16(ख). निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों का वाक्य प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए :

दाल न गलना [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दाल न गलना का अर्थ किसी की चाल, युक्ति या प्रयत्न सफल न होना है।
- प्रयोग ऐसा हो कि किसी उद्देश्य की पूर्ति में बाधा और प्रयास की विफलता स्पष्ट दिखाई दे।

चरण 1: मुहावरे का आशय समझिए दाल न गलना भोजन पकने की बात नहीं कहता। इसका लाक्षणिक अर्थ है कि किसी व्यक्ति का अपना काम निकालने का उपाय नहीं चल सका। प्रायः चालाकी या अनुचित तरीके के विफल होने पर इसका प्रयोग होता है।

चरण 2: असफल युक्ति का प्रसंग चुनिए रिश्वत देकर अनुचित काम कराने की कोशिश और ईमानदार अधिकारी का इनकार ऐसा प्रसंग बनाते हैं जिसमें व्यक्ति की चाल विफल होती है। इससे मुहावरे का अर्थ बिना अलग व्याख्या के समझ आता है।

चरण 3: निष्कर्ष वाक्य-प्रयोग: ठेकेदार ने रिश्वत देकर अपना अनुचित काम कराना चाहा, पर ईमानदार अधिकारी के सामने उसकी दाल नहीं गली।

त्वरित सुझाव: दाल न गलना के प्रयोग में किसी चाल या उपाय का प्रयास और उसकी असफलता दोनों स्पष्ट रखिए।

16(ग). निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों का वाक्य प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए :

दूर के ढोल सुहावने [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दूर के ढोल सुहावने का अर्थ है कि दूर की वस्तु या स्थिति वास्तविक अनुभव के अभाव में अधिक आकर्षक लगती है।
- वाक्य में पहले का आकर्षण और निकट से अनुभव करने पर ज्ञात कठिनाई के बीच अंतर दिखना चाहिए।

चरण 1: लोकोक्ति का आशय पहचानिए लोकोक्ति केवल ढोल की ध्वनि की प्रशंसा नहीं करती। इसका संकेत इस बात की ओर है कि

किसी स्थिति की कठिनाइयाँ जाने बिना हम उसे बहुत अच्छा मान लेते हैं। वास्तविकता सामने आने पर यह धारणा बदल सकती है।

चरण 2: अनुभव से बदली धारणा दिखाइए महानगर का आकर्षक जीवन दूर से सुखमय प्रतीत हो सकता है। वहाँ रहने पर भीड़, महँगाई और भागदौड़ का अनुभव होने का प्रसंग इस लोकोक्ति के अर्थ को स्पष्ट करता है।

चरण 3: निष्कर्ष वाक्य-प्रयोग: मुझे महानगर का जीवन बहुत सुखमय लगता था, पर वहाँ की महँगाई और भागदौड़ देखकर समझ आया कि दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

त्वरित सुझाव: दूर से आकर्षण और पास जाकर कठिनाई का अनुभव, इन दोनों स्थितियों को प्रयोग में साथ दिखाइए।

16(घ). निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों का वाक्य प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए :

ढाक के तीन पात [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ढाक के तीन पात का अर्थ है अनेक प्रयासों या परिवर्तनों के दावों के बाद भी स्थिति का पहले जैसी बनी रहना।
- इस लोकोक्ति के प्रयोग में सुधार की आशा और अंत में कोई वास्तविक परिवर्तन न होने का भाव स्पष्ट होना चाहिए।

चरण 1: स्थिर स्थिति का भाव पहचानिए यह लोकोक्ति ढाक के पत्तों की संख्या की जानकारी देने के लिए प्रयुक्त नहीं होती। इसका आशय है कि प्रयास किए गए, पर परिणाम में सुधार नहीं हुआ और समस्या वैसी ही बनी रही।

चरण 2: निष्फल प्रयास का प्रसंग चुनिए बार-बार शिकायत करने पर सड़क की मरम्मत होने की आशा होती है। शिकायतों के बावजूद गड्ढों का वैसे ही बने रहना सुधार न होने को दिखाता है, इसलिए यह इस लोकोक्ति का उपयुक्त प्रसंग है।

चरण 3: निष्कर्ष वाक्य-प्रयोग: मोहल्ले की सड़क ठीक कराने के लिए कई बार शिकायत की, पर गड्ढे आज भी वैसे ही हैं; वही ढाक के तीन पात।

त्वरित सुझाव: प्रयोग में पहले किए गए प्रयास और बाद में अपरिवर्तित स्थिति बताइए, तभी लोकोक्ति का अर्थ स्पष्ट होगा।

17(क). निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

प्रत्येक राष्ट्र की अपनी सांस्कृतिक धरोहर होती है जिसके बल पर वह प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहता है। मानव युग-युग से अपने जीवन को अधिक सुखमय, उपयोगी, शांतिमय और आनंदपूर्ण बनाने का प्रयास कर रहा है। इस प्रयास का आधार वह सांस्कृतिक धरोहर होती है जो प्रत्येक मानव को विरासत के रूप में मिलती है और इस प्रयास के फलस्वरूप मानव अपना विकास करता है। यह विकास सांस्कृतिक आधार के बिना संभव नहीं है। सभ्यता और संस्कृति दो अलग-अलग चीज़ें हैं। यद्यपि दोनों में गहरा रिश्ता है किन्तु संस्कृति मनुष्य को श्रेष्ठ और उन्नत बनाने की साधनाओं का नाम है और सभ्यता उन साधनाओं के फलस्वरूप उपलब्ध हुई जीवन प्रणाली का नाम है। सभ्यता के अंतर में बहने वाली विचारधारा को हम संस्कृति कहते हैं जिसमें युगों से मानव-विकास के बीज विद्यमान हैं। किसी राष्ट्र का मूल्यांकन हम उसकी संस्कृति के आधार पर भी कर सकते हैं।

'सांस्कृतिक धरोहर' से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश में किसी पद का आशय उसके प्रसंग और उसके बारे में कही गई बातों से निश्चित किया जाता है।
- अवतरण में सांस्कृतिक धरोहर को विरासत में मिलने वाला और मानव-विकास का आधार बनने वाला तत्व बताया गया है।

चरण 1: निर्णायक कथन पहचानिए गद्यांश कहता है कि सांस्कृतिक धरोहर प्रत्येक मानव को विरासत के रूप में मिलती है। इसलिए

धरोहर का आशय किसी व्यक्ति की केवल निजी उपलब्धि से नहीं, बल्कि पूर्व पीढ़ियों से मिले सांस्कृतिक आधार से है।

चरण 2: विकास से उसका संबंध समझिए इसी विरासत के बल पर राष्ट्र प्रगति करता है और मनुष्य अपना जीवन सुखमय तथा उपयोगी बनाने का प्रयास करता है। उत्तर में विरासत और उन्नति के आधार, दोनों भावों को जोड़ना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष सांस्कृतिक धरोहर से अभिप्राय विरासत में प्राप्त उस सांस्कृतिक विचारधारा और साधनाओं से है जो मनुष्य तथा राष्ट्र की उन्नति का आधार बनती हैं।

त्वरित सुझाव: धरोहर का अर्थ बताते समय गद्यांश के विरासत और विकास के आधार वाले संकेतों को जोड़िए।

17(ख). निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

प्रत्येक राष्ट्र की अपनी सांस्कृतिक धरोहर होती है जिसके बल पर वह प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहता है। मानव युग-युग से अपने जीवन को अधिक सुखमय, उपयोगी, शांतिमय और आनंदपूर्ण बनाने का प्रयास कर रहा है। इस प्रयास का आधार वह सांस्कृतिक धरोहर होती है जो प्रत्येक मानव को विरासत के रूप में मिलती है और इस प्रयास के फलस्वरूप मानव अपना विकास करता है। यह विकास सांस्कृतिक आधार के बिना संभव नहीं है। सभ्यता और संस्कृति दो अलग-अलग चीज़ें हैं। यद्यपि दोनों में गहरा रिश्ता है किन्तु संस्कृति मनुष्य को श्रेष्ठ और उन्नत बनाने की साधनाओं का नाम है और सभ्यता उन साधनाओं के फलस्वरूप उपलब्ध हुई जीवन प्रणाली का नाम है। सभ्यता के अंतर में बहने वाली विचारधारा को हम संस्कृति कहते हैं जिसमें युगों से मानव-विकास के बीज विद्यमान हैं। किसी राष्ट्र का मूल्यांकन हम उसकी संस्कृति के आधार पर भी कर सकते हैं।

जीवन को सुखी बनाने का प्रयास मूलतः किस पर निर्भर होता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी प्रयास के आधार संबंधी प्रश्न में गद्यांश में बताए गए मूल कारण या सहारे को स्पष्ट करना होता है।
- अवतरण सुखमय जीवन के प्रयास को विरासत में मिली सांस्कृतिक धरोहर पर आधारित मानता है।

चरण 1: प्रश्न से संबंधित वाक्य खोजिए मनुष्य के जीवन को सुखमय, उपयोगी, शांतिमय और आनंदपूर्ण बनाने के प्रयास का उल्लेख करने के बाद लेखक उसके आधार की बात करता है। यह क्रम बताता है कि उत्तर अगले कथन में मिलता है।

चरण 2: निर्भरता स्पष्ट कीजिए लेखक उसी प्रयास का आधार सांस्कृतिक धरोहर को कहता है और बताता है कि यह धरोहर विरासत में मिलती है। अतः उत्तर का केंद्र केवल व्यक्तिगत इच्छा या प्रयास नहीं, उसका सांस्कृतिक आधार होना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष जीवन को सुखी बनाने का प्रयास मूलतः उस सांस्कृतिक धरोहर पर निर्भर होता है जो मनुष्य को विरासत में प्राप्त होती है।

त्वरित सुझाव: इस प्रयास का आधार वाले वाक्य को सुखमय जीवन के उल्लेख से जोड़कर सीधा उत्तर लिखिए।

17(ग). निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

प्रत्येक राष्ट्र की अपनी सांस्कृतिक धरोहर होती है जिसके बल पर वह प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहता है। मानव युग-युग से अपने जीवन को अधिक सुखमय, उपयोगी, शांतिमय और आनंदपूर्ण बनाने का प्रयास कर रहा है। इस प्रयास का आधार वह सांस्कृतिक धरोहर होती है जो प्रत्येक मानव को विरासत के रूप में मिलती है और इस प्रयास के फलस्वरूप मानव अपना विकास करता है। यह विकास सांस्कृतिक आधार के बिना संभव नहीं है। सभ्यता और संस्कृति दो अलग-अलग चीज़ें हैं। यद्यपि दोनों में गहरा रिश्ता है किन्तु संस्कृति मनुष्य को श्रेष्ठ और उन्नत बनाने की साधनाओं का नाम है और सभ्यता उन साधनाओं के फलस्वरूप उपलब्ध हुई जीवन प्रणाली का नाम है। सभ्यता के अंतर में बहने वाली विचारधारा को हम संस्कृति कहते हैं जिसमें युगों से मानव-विकास के बीज विद्यमान हैं। किसी राष्ट्र का मूल्यांकन हम उसकी संस्कृति के आधार पर भी कर सकते हैं।

संस्कृति और सभ्यता में क्या अंतर है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलनात्मक प्रश्न में दोनों पदों का अर्थ एक ही आधार पर स्पष्ट करना चाहिए।
- गद्यांश संस्कृति को श्रेष्ठता की साधनाएँ और सभ्यता को उन साधनाओं से प्राप्त जीवन-प्रणाली बताता है।

चरण 1: संस्कृति की पहचान कीजिए अवतरण के अनुसार मनुष्य को श्रेष्ठ और उन्नत बनाने वाली साधनाओं का नाम संस्कृति है। इसे सभ्यता के भीतर बहने वाली विचारधारा भी कहा गया है; इसलिए इसका संबंध उन्नति के वैचारिक आधार से है।

चरण 2: सभ्यता से तुलना कीजिए सभ्यता उन साधनाओं के फलस्वरूप उपलब्ध जीवन-प्रणाली है। दोनों में गहरा संबंध है, फिर भी उन्हें समान नहीं कहा गया है। अंतर बताते समय साधना और उससे प्राप्त जीवन-प्रणाली का भेद बनाए रखना आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष संस्कृति मनुष्य को श्रेष्ठ और उन्नत बनाने वाली साधनाएँ हैं, जबकि सभ्यता उन साधनाओं के फलस्वरूप प्राप्त जीवन-प्रणाली है।

त्वरित सुझाव: संस्कृति के लिए साधना और सभ्यता के लिए उसका परिणाम बनी जीवन-प्रणाली, यह भेद याद रखिए।

17(घ). निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

प्रत्येक राष्ट्र की अपनी सांस्कृतिक धरोहर होती है जिसके बल पर वह प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहता है। मानव युग-युग से अपने जीवन को अधिक सुखमय, उपयोगी, शांतिमय और आनंदपूर्ण बनाने का प्रयास कर रहा है। इस प्रयास का आधार वह सांस्कृतिक धरोहर होती है जो प्रत्येक मानव को विरासत के रूप में मिलती है और इस प्रयास के फलस्वरूप मानव अपना विकास करता है। यह विकास सांस्कृतिक आधार के बिना संभव नहीं है। सभ्यता और संस्कृति दो अलग-अलग चीज़ें हैं। यद्यपि दोनों में गहरा रिश्ता है किन्तु संस्कृति मनुष्य को श्रेष्ठ और उन्नत बनाने की साधनाओं का नाम है और सभ्यता उन साधनाओं के फलस्वरूप उपलब्ध हुई जीवन प्रणाली का नाम है। सभ्यता के अंतर में बहने वाली विचारधारा को हम संस्कृति कहते हैं जिसमें युगों से मानव-विकास के बीज विद्यमान हैं। किसी राष्ट्र का मूल्यांकन हम उसकी संस्कृति के आधार पर भी कर सकते हैं।

आप कैसे कह सकते हैं कि संस्कृति में मनुष्य के विकास के बीज विद्यमान होते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी कथन की पुष्टि करते समय गद्यांश में दिए कारण और उसके परिणाम का संबंध दिखाना चाहिए।
- संस्कृति मनुष्य को श्रेष्ठ बनाती है और उसके जीवन को अधिक सुखमय तथा उपयोगी बनाने के प्रयास का आधार देती है।

चरण 1: विकास का आधार पहचानिए गद्यांश में स्पष्ट किया गया है कि सांस्कृतिक आधार के बिना मानव-विकास संभव नहीं है। विरासत में मिली संस्कृति के सहारे मनुष्य जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास करता है। इससे संस्कृति की प्रेरक भूमिका स्पष्ट होती है।

चरण 2: बीज का रूपक समझिए जैसे बीज में आगे बढ़ने की संभावना होती है, वैसे ही संस्कृति की विचारधारा और साधनाएँ मानव की उन्नति की संभावनाएँ सँजोए रहती हैं। यहाँ बीज भौतिक बीज नहीं, विकास के मूल प्रेरक तत्वों का संकेत है।

चरण 3: निष्कर्ष संस्कृति मनुष्य को श्रेष्ठ और उन्नत बनाने की प्रेरणा तथा आधार देती है। उसी के सहारे मनुष्य जीवन को सुखमय और उपयोगी बनाता है, इसलिए उसमें मानव-विकास के बीज विद्यमान हैं।

त्वरित सुझाव: बीज को विकास की संभावना मानकर संस्कृति की प्रेरणा और मनुष्य की उन्नति का संबंध बताइए।

17(ङ). निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

प्रत्येक राष्ट्र की अपनी सांस्कृतिक धरोहर होती है जिसके बल पर वह प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहता है। मानव युग-युग से अपने जीवन को अधिक सुखमय, उपयोगी, शांतिमय और आनंदपूर्ण बनाने का प्रयास कर रहा है। इस प्रयास का आधार वह सांस्कृतिक धरोहर होती है जो प्रत्येक मानव को विरासत के रूप में मिलती है और इस प्रयास के फलस्वरूप मानव अपना विकास करता है। यह विकास सांस्कृतिक आधार के बिना संभव नहीं है। सभ्यता और संस्कृति दो अलग-अलग चीज़ें हैं। यद्यपि दोनों में गहरा रिश्ता है किन्तु संस्कृति मनुष्य को श्रेष्ठ और उन्नत बनाने की साधनाओं का नाम है और सभ्यता उन साधनाओं के फलस्वरूप उपलब्ध हुई जीवन प्रणाली का नाम है। सभ्यता के अंतर में बहने वाली विचारधारा को हम संस्कृति कहते हैं जिसमें युगों से मानव-विकास के बीज विद्यमान हैं। किसी राष्ट्र का मूल्यांकन हम उसकी संस्कृति के आधार पर भी कर सकते हैं।

संस्कृति के आधार पर किसी राष्ट्र का मूल्यांकन कैसे किया जा सकता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निष्कर्ष संबंधी उत्तर गद्यांश में पहले बताई गई विशेषताओं के आधार पर तैयार किया जाता है।
- राष्ट्र की संस्कृति उसकी विचारधारा और मनुष्य को श्रेष्ठ बनाने वाली साधनाओं को प्रकट करती है।

चरण 1: संस्कृति की विशेषताएँ पहचानिए अवतरण में संस्कृति को मानव को श्रेष्ठ और उन्नत बनाने की साधनाएँ कहा गया है। राष्ट्र अपनी सांस्कृतिक धरोहर के बल पर प्रगति करता है, इसलिए संस्कृति उसके जीवन और विकास की दिशा से जुड़ी होती है।

चरण 2: मूल्यांकन का आधार स्पष्ट कीजिए किसी राष्ट्र की संस्कृति देखकर यह परखा जा सकता है कि उसकी विचारधारा और साधनाएँ मनुष्य को कितना श्रेष्ठ तथा जीवन को कितना सुखमय, उपयोगी और शांतिमय बनाती हैं। इस प्रकार संस्कृति राष्ट्र की उन्नति को समझने का आधार देती है।

चरण 3: निष्कर्ष किसी राष्ट्र की संस्कृति में निहित विचारधारा और मानव को श्रेष्ठ बनाने वाली साधनाओं को देखकर उसकी उन्नति तथा जीवन-दृष्टि का मूल्यांकन किया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: मूल्यांकन को गद्यांश की श्रेष्ठता, प्रगति और सुखमय जीवन की कसौटियों से जोड़कर उत्तर दीजिए।

18(क). निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

बहुत दिनों से आज मिली है साँझ अकेली, साथ नहीं हो तुम !
पेड़ खड़े फैलाए बाँहें
लौट रहे घर को चरवाहे
यह गोधूली ! साथ नहीं हो तुम।
कुल-बुल, कुल-बुल नीड़-नीड़ में
चह-चह, चह-चह भीड़-भीड़ में
धुन अलबेली, साथ नहीं हो तुम।
ऊँचे स्वर से गाते निर्झर
उमड़ी धारा, जैसी मुझ पर —
बीती, झेली, साथ नहीं हो तुम।

'तुम' कौन है जिसके साथ न होने से साँझ सूनी लग रही है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में संबोधन का अर्थ प्रसंग और कवि की अनुभूति से समझा जाता है।
- बार-बार आया वाक्यांश साथ नहीं हो तुम प्रिय व्यक्ति के अभाव और विरह की अनुभूति प्रकट करता है।

चरण 1: संबोधन का संदर्भ पहचानें कवि साँझ को अकेला अनुभव करता है और प्राकृतिक दृश्यों के बीच बार-बार किसी आत्मीय के साथ न होने की बात कहता है। इसलिए तुम प्रकृति के किसी दृश्य का नाम नहीं, उस आत्मीय व्यक्ति के लिए प्रयुक्त संबोधन है।

चरण 2: अभाव के भाव को समझें चरवाहों की वापसी, पक्षियों का कलरव और झरनों का स्वर वातावरण को सजीव बनाते हैं। फिर भी कवि का अकेलापन बना हुआ है। इससे स्पष्ट होता है कि उसे अपने प्रिय का साथ चाहिए; उसी के अभाव में सुंदर साँझ भी सूनी है।

चरण 3: निष्कर्ष यहाँ तुम से कवि के प्रिय व्यक्ति अर्थात् प्रियतम का संकेत है, जिसके साथ न होने से साँझ सूनी लग रही है।

त्वरित सुझाव: साथ नहीं हो तुम की पुनरावृत्ति को कवि के अकेलेपन से जोड़कर संबोधित प्रिय व्यक्ति की पहचान करें।

18(ख). निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

बहुत दिनों से आज मिली है साँझ अकेली, साथ नहीं हो तुम !
पेड़ खड़े फैलाए बाँहें
लौट रहे घर को चरवाहे
यह गोधूली ! साथ नहीं हो तुम।
कुल-बुल, कुल-बुल नीड़-नीड़ में
चह-चह, चह-चह भीड़-भीड़ में
धुन अलबेली, साथ नहीं हो तुम।
ऊँचे स्वर से गाते निर्झर
उमड़ी धारा, जैसी मुझ पर —
बीती, झेली, साथ नहीं हो तुम।
'गोधूलि' के समय कैसा दृश्य है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दृश्य-वर्णन में कविता के प्रत्यक्ष बिंबों को आधार बनाया जाता है।
- गोधूलि यहाँ चरवाहों के घर लौटने और पक्षियों के नीड़ों में चहचहाने से पहचानी जाती है।

चरण 1: साँझ का दृश्य पहचानें कवि के सामने पेड़ अपनी शाखाएँ फैलाए खड़े हैं और चरवाहे घर की ओर लौट रहे हैं। यह दिन के समाप्त होने तथा लौटने का समय है। पेड़ों की फैली शाखाओं को कवि ने मानवीय बाँहों के रूप में देखा है।

चरण 2: वातावरण की सजीवता जोड़ें नीड़-नीड़ में पक्षियों की कुलबुलाहट और चहचहाहट है। इन ध्वनियों से संध्या का वातावरण जीवंत और मधुर लगता है। दृश्य में पेड़ों, लौटते चरवाहों और पक्षियों की गतिविधियों को जोड़ने पर गोधूलि का पूरा चित्र उभरता है।

चरण 3: निष्कर्ष गोधूलि के समय पेड़ बाँहों जैसी शाखाएँ फैलाए खड़े हैं, चरवाहे घर लौट रहे हैं और नीड़ों में पक्षी कुलबुलाते तथा चहचहाते हैं।

त्वरित सुझाव: गोधूलि के दृश्य के लिए पेड़, लौटते चरवाहे और नीड़ों के पक्षी चुनें; कवि की निजी पीड़ा को दृश्य का विकल्प न बनाएँ।

18(ग). निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

बहुत दिनों से आज मिली है साँझ अकेली, साथ नहीं हो तुम !
पेड़ खड़े फैलाए बाँहें
लौट रहे घर को चरवाहे
यह गोधूली ! साथ नहीं हो तुम।
कुल-बुल, कुल-बुल नीड़-नीड़ में
चह-चह, चह-चह भीड़-भीड़ में
धुन अलबेली, साथ नहीं हो तुम।
ऊँचे स्वर से गाते निर्झर
उमड़ी धारा, जैसी मुझ पर —
बीती, झेली, साथ नहीं हो तुम।

अलबेली धुन से क्या आशय है ? यह धुन किसकी है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में ध्वनि का अर्थ उसके निकट आए शब्दों से निर्धारित होता है।
- अलबेली का अर्थ निराली, मनोहर और अपनी विशिष्टता वाली है।

चरण 1: धुन के स्रोत को पहचानें धुन अलबेली से पहले नीड़-नीड़ में कुलबुलाहट और भीड़-भीड़ में चहचहाहट का वर्णन है। नीड़ पक्षियों के घोंसले हैं, इसलिए इन पंक्तियों में सुनाई देने वाली धुन पक्षियों के सामूहिक कलरव की है।

चरण 2: विशेषण का भाव स्पष्ट करें कुल-बुल और चह-चह की आवृत्ति से पक्षियों की चंचल, मधुर आवाजों का अनुभव होता है। कवि को यह स्वर अपनी स्वाभाविक लय के कारण निराला लगता है। यहाँ अलबेली धुन का आशय किसी वाद्य से बजाई धुन नहीं, पक्षियों की मनोहारी चहचहाहट है।

चरण 3: निष्कर्ष अलबेली धुन का आशय निराली और मनोहर स्वर-लहरी से है। यह नीड़ों में चहचहाते पक्षियों के कलरव की धुन है।

त्वरित सुझाव: धुन के ठीक पहले आए कुल-बुल, चह-चह और नीड़ शब्दों से उसका स्रोत पक्षियों का कलरव पहचानें।

18(घ). निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

बहुत दिनों से आज मिली है साँझ अकेली, साथ नहीं हो तुम !
पेड़ खड़े फैलाए बाँहें
लौट रहे घर को चरवाहे
यह गोधूली ! साथ नहीं हो तुम।
कुल-बुल, कुल-बुल नीड़-नीड़ में
चह-चह, चह-चह भीड़-भीड़ में
धुन अलबेली, साथ नहीं हो तुम।
ऊँचे स्वर से गाते निर्झर
उमड़ी धारा, जैसी मुझ पर —
बीती, झेली, साथ नहीं हो तुम।
झरनों के शोर के बीच कवि पर क्या बीती ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति के दृश्य और स्वर कवि की निजी अनुभूति को तीव्र बना सकते हैं।
- उमड़ती धारा और बीती, झेली का संबंध यहाँ प्रिय के वियोग से उपजी वेदना से है।

चरण 1: झरने और मन की धारा का संबंध देखें झरने ऊँचे स्वर में गा रहे हैं और उनकी धारा उमड़ रही है। कवि इस बाहरी प्रवाह को अपने भीतर उठती भावनाओं से जोड़ता है। जैसे झरने का वेग तीव्र है, वैसे ही प्रिय की अनुपस्थिति से उसका दुख उमड़ता है।

चरण 2: दोहराए संबोधन से अनुभूति पहचानें इस दृश्य के बाद भी कवि कहता है कि प्रिय उसके साथ नहीं है। इसलिए झरनों के शोर के बीच उसकी अनुभूति आनंदपूर्ण संगति की नहीं, वियोग और अकेलेपन की है। बीती, झेली शब्द इस दुख को सहने की स्थिति प्रकट करते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष झरनों के शोर के बीच कवि के मन में प्रिय-वियोग की पीड़ा उमड़ पड़ी। प्रिय की याद से व्याकुल होकर उसे अकेलेपन का दुख सहना पड़ा।

त्वरित सुझाव: उमड़ी धारा को अंतिम पंक्ति में प्रिय की अनुपस्थिति से जोड़ें; उत्तर में भीतर उमड़ती विरह-वेदना स्पष्ट करें।

18(ङ). निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

बहुत दिनों से आज मिली है साँझ अकेली, साथ नहीं हो तुम !
पेड़ खड़े फैलाए बाँहें
लौट रहे घर को चरवाहे
यह गोधूली ! साथ नहीं हो तुम।
कुल-बुल, कुल-बुल नीड़-नीड़ में
चह-चह, चह-चह भीड़-भीड़ में
धुन अलबेली, साथ नहीं हो तुम।
ऊँचे स्वर से गाते निर्झर
उमड़ी धारा, जैसी मुझ पर —
बीती, झेली, साथ नहीं हो तुम।
आशय स्पष्ट कीजिए — "पेड़ खड़े बाँहें फैलाए।" [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मानवीकरण में प्रकृति की वस्तुओं पर मनुष्य की क्रिया या रूप का आरोप किया जाता है।
- यहाँ पेड़ों की फैली शाखाएँ मनुष्य की फैली बाँहों के समान दिखाई गई हैं।

चरण 1: चित्र का वास्तविक आधार पहचानें पेड़ों की शाखाएँ दोनों ओर फैली हुई हैं। दूर से देखने पर इनका आकार ऐसे व्यक्ति की याद दिलाता है जो बाँहें फैलाकर खड़ा हो। पंक्ति में बाँहों का प्रयोग इन्हीं विस्तृत शाखाओं के लिए हुआ है।

चरण 2: काव्यात्मक भाव समझें कवि पेड़ों को मानवीय रूप देता है, मानो वे बाँहें फैलाकर किसी के स्वागत या आलिंगन को तत्पर हों। इससे प्राकृतिक दृश्य में आत्मीयता आ जाती है। यह केवल पेड़ की बनावट बताना नहीं, उसे संवेदनशील मानवीय मुद्रा में देखना है।

चरण 3: निष्कर्ष आशय यह है कि पेड़ों की शाखाएँ चारों ओर फैली हैं और वे ऐसे लगते हैं मानो किसी के स्वागत या आलिंगन के लिए बाँहें फैलाए खड़े हों। यहाँ पेड़ों का मानवीकरण हुआ है।

त्वरित सुझाव: पहले बाँहों का वास्तविक संदर्भ शाखाएँ बताइए, फिर स्वागत या आलिंगन की मुद्रा से मानवीकरण का भाव स्पष्ट कीजिए।

---

19. आपको समाचार-पत्र से ज्ञात हुआ कि राजस्थान शिक्षा-बोर्ड अपनी पाठ्य-पुस्तकें बदलने जा रहा है। बोर्ड के निदेशक को पत्र लिखकर बताइए कि आपके विचार से माध्यमिक कक्षाओं की हिन्दी की पुस्तकें कैसी हों और उनमें किन बातों का समावेश होना चाहिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- औपचारिक सुझाव-पत्र में विनम्र, स्पष्ट और विषयानुकूल भाषा के साथ संबोधन तथा समापन का निर्धारित क्रम रखा जाता है।
- माध्यमिक स्तर की हिन्दी पाठ्य-पुस्तकों के लिए भाषा की सरलता, साहित्य की विविधता, जीवनोपयोगिता और विद्यार्थियों की रुचि महत्त्वपूर्ण हैं।

चरण 1: पत्र का प्रारूप निर्धारित करें पत्र में प्रेषक का पता और दिनांक देने के बाद बोर्ड के निदेशक का पदनाम तथा पता लिखें। विषय में हिन्दी की नई पाठ्य-पुस्तकों के संबंध में सुझाव देने का उद्देश्य स्पष्ट करें। महोदय संबोधन से आरंभ करके निवेदन और सुझावों को अलग अनुच्छेदों में रखें तथा भवदीय और नाम से समापन करें।

चरण 2: सुझावों की विषयवस्तु व्यवस्थित करें समाचार-पत्र से मिली सूचना का उल्लेख भूमिका में करें। फिर पुस्तकों की भाषा, पाठों की विविधता, जीवन-मूल्य, व्यावहारिक हिन्दी, अभ्यास और छपाई से संबंधित ठोस सुझाव दें। केवल पुस्तकों को अच्छा बनाने का आग्रह पर्याप्त नहीं है; प्रत्येक सुझाव बताए कि विद्यार्थियों को क्या पढ़ने या अभ्यास करने का अवसर मिलेगा।

चरण 3: पूरा नमूना पत्र लिखें 25, शास्त्री नगर

जयपुर

दिनांक: 18 मार्च, 2007

सेवा में,

निदेशक महोदय

राजस्थान शिक्षा-बोर्ड

अजमेर

विषय: माध्यमिक कक्षाओं की हिन्दी पाठ्य-पुस्तकों के संबंध में सुझाव।

महोदय,

हाल में समाचार-पत्र से ज्ञात हुआ कि बोर्ड अपनी पाठ्य-पुस्तकें बदलने जा रहा है। इस अवसर पर माध्यमिक कक्षाओं की हिन्दी पुस्तकों के संबंध में कुछ सुझाव आपके विचारार्थ प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

पुस्तकों की भाषा सरल, शुद्ध और विद्यार्थियों के स्तर के अनुरूप हो। कठिन शब्दों के अर्थ तथा आवश्यक संदर्भ साथ दिए जाएँ। कविता, कहानी, निबंध, संस्मरण, जीवनी और एकांकी जैसी विविध विधाओं के रोचक पाठ हों। प्राचीन और आधुनिक साहित्य का संतुलित परिचय मिले तथा महिला लेखकों और विविध क्षेत्रों के रचनाकारों को उचित स्थान दिया जाए।

पाठों से संवेदनशीलता, राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समानता, पर्यावरण-संरक्षण और वैज्ञानिक दृष्टि को प्रोत्साहन मिले। स्थानीय लोकजीवन तथा संस्कृति के साथ देश की भाषाई-सांस्कृतिक विविधता भी सामने आए। सामग्री किसी जाति, धर्म या लिंग के प्रति भेदभाव न बढ़ाए।

व्यावहारिक हिन्दी के अंतर्गत पत्र, सूचना, संवाद और प्रतिवेदन लेखन के अभ्यास हों। व्याकरण को उदाहरणों और भाषायी प्रयोगों से समझाया जाए। प्रश्न केवल रटने पर आधारित न हों; विद्यार्थियों को तर्क करने, अपनी राय रखने और रचनात्मक लेखन के अवसर मिलें। बोलने और सुनने की गतिविधियाँ भी शामिल की जाएँ।

पुस्तकों की छपाई स्पष्ट, चित्र उपयोगी और मूल्य उचित हों, ताकि सभी विद्यार्थियों तक उनकी पहुँच हो। आशा है कि बोर्ड इन सुझावों पर विचार करके पुस्तकों को उपयोगी और रुचिकर बनाएगा।

धन्यवाद।

भवदीय

अमित कुमार

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में औपचारिक प्रारूप के साथ सरल भाषा, विविध साहित्य, समावेशी जीवन-मूल्य, व्यावहारिक अभ्यास तथा सुगम प्रस्तुति संबंधी सुझाव दिए गए हैं।

त्वरित सुझाव: इस पत्र में समाचार का उल्लेख करने के बाद भाषा, पाठ्य-सामग्री और अभ्यास के ठोस सुझाव अलग अनुच्छेदों में दें।

अथवा

19. सिक्किम-निवासी ईशा देउपा की ओर से उसकी सहेली सजीली को पत्र लिखकर धन्यवाद दीजिए कि उसने दशहरे के अवकाश में उसे अपने शहर बुलाकर वहाँ की सैर कराई। देखे हुए कुछ स्थानों का भी उल्लेख करें। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सहेली को लिखा गया पत्र अनौपचारिक होता है। इसकी भाषा आत्मीय, सहज और व्यक्तिगत होनी चाहिए।
- धन्यवाद-पत्र में निमंत्रण, स्नेहपूर्ण आतिथ्य और यात्रा के यादगार अनुभवों का उल्लेख किया जाता है। प्रेषक का पता, दिनांक, संबोधन और आत्मीय समापन इसके आवश्यक अंग हैं।

चरण 1: पत्र का प्रारूप निर्धारित करें पत्र ईशा देउपा की ओर से लिखा जाएगा, इसलिए प्रेषक का पता सिक्किम का होगा और संबोधन

में सजीली का नाम आएगा। प्रश्न में सहेली का शहर नहीं दिया गया है; प्रस्तुत आदर्श पत्र में दिल्ली की यात्रा का वर्णन किया गया है। अनौपचारिक पत्र में कार्यालयी पत्र जैसा विषय या अधिकारी का पदनाम लिखने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 2: धन्यवाद और यात्रा के अनुभवों को जोड़ें पहले सकुशल घर पहुँचने का समाचार और दशहरे के अवकाश में आमंत्रित करने के लिए धन्यवाद दें। फिर दिल्ली के कुछ दर्शनीय स्थलों तथा दशहरे के आयोजन की स्मृतियों का उल्लेख करें। सहेली के परिवार के स्नेह के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए अंत में उसे सिक्किम आने का निमंत्रण दें। इससे पत्र में प्रश्न के सभी अपेक्षित बिंदु स्वाभाविक रूप से जुड़ जाते हैं।

चरण 3: पूरा पत्र लिखें तादोंग, गंगटोक

सिक्किम

10 अक्तूबर, 2006

प्रिय सजीली,

सप्रेम नमस्ते।

मैं सकुशल घर पहुँच गई हूँ, किंतु तुम्हारे साथ बिताए दशहरे के अवकाश की मधुर स्मृतियाँ अभी भी मन में बसी हुई हैं। अपने शहर दिल्ली बुलाने और इतने प्रेम से वहाँ की सैर कराने के लिए तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद। तुम्हारे कारण इस बार की छुट्टियाँ सचमुच अविस्मरणीय बन गईं।

लाल किले की भव्यता और कुतुबमीनार की ऊँचाई देखकर मैं चकित रह गई। इंडिया गेट पर देश के वीरों के प्रति श्रद्धा उमड़ आई। राजघाट के शांत वातावरण ने भी मन को बहुत प्रभावित किया। तुम्हारे साथ पुरानी दिल्ली की गलियों में घूमना और वहाँ के स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद लेना कितना अच्छा लगा! दशहरे के मेले की रौनक और रावण-दहन का दृश्य तो मैं कभी नहीं भूलूँगी।

तुम्हारे माता-पिता ने मुझे अपने परिवार का सदस्य मानकर जो स्नेह दिया, उसके लिए मैं उनकी आभारी हूँ। उन्हें मेरी ओर से सादर प्रणाम कहना। तुमने अपनी पढ़ाई से समय निकालकर मेरी हर सुविधा का ध्यान रखा; तुम्हारी इस आत्मीयता ने हमारी मित्रता को और गहरा कर दिया है।

अब अगली छुट्टियों में तुम सिक्किम अवश्य आना। मैं तुम्हें गंगटोक और आसपास के सुंदर स्थान दिखाऊँगी। तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा रहेगी।

तुम्हारी सखी,

ईशा देउपा

चरण 4: निष्कर्ष इस पत्र में ईशा ने सजीली को निमंत्रण, आतिथ्य और दिल्ली की सैर के लिए धन्यवाद दिया है तथा देखे गए प्रमुख स्थानों का उल्लेख करके अपनी कृतज्ञता व्यक्त की है।

त्वरित सुझाव: सहेली को धन्यवाद देते समय केवल आभार न लिखें; यात्रा के दो-तीन ठोस अनुभव, परिवार के स्नेह और फिर मिलने की इच्छा को भी जोड़ें।

20(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

विश्व में बढ़ता आतंकवाद [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारप्रधान निबंध में विषय की स्पष्ट भूमिका, कारणों और प्रभावों का क्रमबद्ध विवेचन तथा समाधानपरक उपसंहार होना चाहिए।
- आतंकवाद का विवेचन करते समय निर्दोष लोगों के जीवन, सामाजिक सद्भाव और विश्वशांति पर उसके प्रभाव को केंद्र में रखें। किसी धर्म, देश या समुदाय के सभी लोगों को दोषी ठहराना अनुचित है।

चरण 1: विषय की रूपरेखा बनाएँ निबंध की शुरुआत आतंकवाद के अर्थ और उसके व्यापक खतरे से करें। इसके बाद कट्टरता, असहिष्णुता, संगठित उकसावे तथा हिंसक समूहों को मिलने वाली सहायता का उल्लेख करें। अगले अनुच्छेद में जनहानि, आर्थिक क्षति,

भय और सामाजिक अविश्वास के प्रभाव स्पष्ट करें। अंत में सुरक्षा, अंतरराष्ट्रीय सहयोग, न्याय, शिक्षा और नागरिक सजगता के माध्यम से समाधान प्रस्तुत करें।

चरण 2: भाषा और शब्द-सीमा का ध्यान रखें निबंध लगभग 300 शब्दों का रखना है। छोटे, परस्पर जुड़े अनुच्छेदों में प्रत्येक विचार का विकास करें। अप्रमाणित आँकड़े देने या हिंसा का सनसनीखेज वर्णन करने के स्थान पर उसके मानवीय परिणाम और व्यावहारिक समाधान समझाएँ। केवल कठोर कार्रवाई का उल्लेख पर्याप्त नहीं है; युवाओं को भटकने से रोकने और समाज में विश्वास बढ़ाने की आवश्यकता भी स्पष्ट होनी चाहिए।

चरण 3: पूरा निबंध लिखें **विश्व में बढ़ता आतंकवाद**

विज्ञान और संचार की प्रगति ने विश्व को निकट ला दिया है, किंतु आतंकवाद ने मानवता के सामने गंभीर चुनौती खड़ी कर दी है। राजनीतिक या वैचारिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हिंसा और भय का सहारा लेना आतंकवाद है। इसकी सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि निर्दोष नागरिक इसके शिकार बनते हैं।

आतंकवाद के पीछे कट्टरता, असहिष्णुता, सत्ता की लालसा और हिंसक विचारधाराएँ काम करती हैं। कुछ संगठन युवाओं की निराशा तथा असंतोष का लाभ उठाकर उन्हें भटकाते हैं। हथियारों, धन और प्रशिक्षण की उपलब्धता ऐसे संगठनों को बल देती है। संचार के साधनों का दुरुपयोग करके वे घृणा फैलाते और नए सदस्यों को जोड़ते हैं। फिर भी कोई शिकायत निर्दोषों की हत्या को उचित नहीं ठहरा सकती।

आतंकवादी घटनाओं से केवल जनहानि नहीं होती, बल्कि समाज का विश्वास भी टूटता है। बच्चे अनाथ होते हैं, परिवार उजड़ते हैं और लोगों के मन में असुरक्षा घर कर जाती है। पर्यटन, व्यापार तथा विकास प्रभावित होते हैं। सुरक्षा पर बढ़ता व्यय शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों के संसाधनों को सीमित कर सकता है। भय और अफवाहें समुदायों के बीच दूरी बढ़ाकर आतंकियों के उद्देश्य को बल देती हैं।

इस समस्या का समाधान सामूहिक प्रयास से संभव है। देशों को राजनीतिक स्वार्थों से ऊपर उठकर आतंकवाद के विरुद्ध सहयोग करना चाहिए। धन और हथियारों की आपूर्ति रोकना, खुफिया सूचनाएँ साझा करना तथा अपराधियों को कानून के अनुसार दंडित करना आवश्यक है। साथ ही न्यायपूर्ण शासन, रोजगार, शिक्षा और संवाद से युवाओं को हिंसक संगठनों के प्रभाव से बचाना होगा। नागरिकों को सतर्क रहना चाहिए, पर किसी धर्म या समुदाय के प्रति संदेह और घृणा नहीं फैलानी चाहिए।

आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष मानवता और शांति की रक्षा का संघर्ष है। दृढ़ सुरक्षा व्यवस्था के साथ सहिष्णुता, न्याय और पारस्परिक विश्वास बढ़ाकर ही हम भयमुक्त विश्व की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष आतंकवाद से मुक्ति के लिए कानून के अनुरूप दृढ़ कार्रवाई, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और शिक्षा, न्याय तथा सामाजिक सद्भाव पर आधारित दीर्घकालीन प्रयास आवश्यक हैं।

त्वरित सुझाव: इस विषय पर भूमिका, कारण, दुष्परिणाम और समाधान का क्रम रखें; अंतिम अनुच्छेद में सुरक्षा के साथ न्याय और सामाजिक सद्भाव का संबंध अवश्य बताएँ।

20(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

भारत : एक उभरती विश्व-शक्ति [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारप्रधान निबंध में विषय का परिचय, तर्कपूर्ण विवेचन और सार्थक समापन क्रमबद्ध अनुच्छेदों में आते हैं। भाषा स्पष्ट और विषय के अनुरूप होनी चाहिए।
- विश्व-शक्ति बनने के आधारों में आर्थिक प्रगति, वैज्ञानिक क्षमता, लोकतांत्रिक संस्थाएँ, सांस्कृतिक प्रभाव तथा अंतरराष्ट्रीय उत्तरदायित्व शामिल हैं। उपलब्धियों के साथ चुनौतियों का विवेचन निबंध को संतुलित बनाता है।

चरण 1: रूपरेखा तैयार कीजिए शीर्षक के बाद स्वतंत्र भारत की विकास-यात्रा से आरंभ करें। मुख्य भाग में अर्थव्यवस्था, विज्ञान, लोकतंत्र और संस्कृति को स्थान दें। फिर गरीबी, अशिक्षा तथा असमानता जैसी बाधाओं का उल्लेख करके सुधार की दिशा सुझाएँ। लगभग 300 शब्दों के निबंध में अनावश्यक आँकड़ों के स्थान पर स्पष्ट तर्क दें और अंत में विश्वकल्याण से जुड़ी शक्ति की कल्पना प्रस्तुत

करें।

चरण 2: पूर्ण निबंध लिखिए **भारत : एक उभरती विश्व-शक्ति**

भारत प्राचीन संस्कृति और नवीन संभावनाओं का देश है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय उसके सामने गरीबी, अशिक्षा और आर्थिक पिछड़ेपन की गंभीर समस्याएँ थीं। कठिनाइयों के बावजूद उसने कृषि, उद्योग, शिक्षा और विज्ञान में उल्लेखनीय प्रगति की है। इसी विकास-यात्रा में भारत के विश्व-शक्ति बनने की संभावनाएँ दिखाई देती हैं।

आर्थिक क्षेत्र में भारत का विशाल बाजार, उद्यमशीलता और युवा जनशक्ति उसकी प्रमुख ताकतें हैं। कृषि ने खाद्यान्न की उपलब्धता बढ़ाई है, जबकि उद्योग और सेवा क्षेत्र ने रोजगार के नए अवसर खोले हैं। सूचना प्रौद्योगिकी में भारतीय प्रतिभा को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली है। वैज्ञानिक अनुसंधान और अंतरिक्ष कार्यक्रम देश की तकनीकी क्षमता का परिचय देते हैं।

भारत की शक्ति केवल आर्थिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है। लोकतांत्रिक व्यवस्था, संविधान और विविधता में एकता उसकी विशिष्ट पहचान हैं। अनेक भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों के सहअस्तित्व का अनुभव दुनिया के लिए महत्त्वपूर्ण है। भारतीय साहित्य, संगीत, योग और दर्शन भी दूसरे देशों के लोगों को आकर्षित करते हैं। विदेशों में बसे भारतीय ज्ञान और संस्कृति के आदान-प्रदान में योगदान देते हैं।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत शांति, सहयोग और राष्ट्रों की संप्रभुता का समर्थक रहा है। उसकी भौगोलिक स्थिति और बड़ी जनसंख्या वैश्विक प्रश्नों में उसकी भूमिका बढ़ाती हैं। किंतु विश्व-शक्ति बनने की राह में अनेक बाधाएँ हैं। गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, सामाजिक विषमता और पर्यावरणीय क्षति को अनदेखा करके स्थायी प्रगति संभव नहीं है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रत्येक नागरिक तक पहुँचनी चाहिए।

इसके लिए शासन में पारदर्शिता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नागरिक कर्तव्यबोध आवश्यक हैं। गाँवों का विकास, महिलाओं की भागीदारी और युवाओं को कौशल देने से प्रगति का आधार मजबूत होगा। हमें ऐसी शक्ति बनना है जिसकी पहचान दूसरों पर प्रभुत्व से नहीं, मानवकल्याण में योगदान से हो। यदि विकास का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे और राष्ट्रीय एकता बनी रहे, तो भारत विश्व में सशक्त, विश्वसनीय तथा सम्मानित स्थान प्राप्त कर सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष निबंध भारत की उभरती क्षमता को आर्थिक, वैज्ञानिक, लोकतांत्रिक और सांस्कृतिक आधारों से स्पष्ट करता है। समावेशी विकास तथा विश्वकल्याण की भावना उसकी प्रगति को स्थायी और सार्थक बना सकती है।

त्वरित सुझाव: इस विषय में उपलब्धियों के बाद चुनौतियों का एक अनुच्छेद अवश्य रखें; समापन में बताइए कि भारत की शक्ति आम नागरिक और विश्वकल्याण के लिए कैसे उपयोगी होगी।

20(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

प्राकृतिक आपदाएँ [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्याख्यात्मक निबंध में विषय का परिचय, कारण, प्रभाव और उपाय तार्किक क्रम में प्रस्तुत किए जाते हैं। अलग-अलग अनुच्छेद एक केंद्रीय विचार से जुड़े होने चाहिए।
- प्राकृतिक घटनाएँ जनजीवन को गंभीर क्षति पहुँचाने पर आपदा का रूप लेती हैं। निबंध में प्राकृतिक कारणों के साथ मानवीय लापरवाही और तैयारी की भूमिका का संतुलित विवेचन आवश्यक है।

चरण 1: विषय और अनुच्छेदों की योजना बनाइए भूमिका में प्रकृति और मनुष्य का संबंध रखें। फिर भूकंप, बाढ़, सूखे और चक्रवात जैसे उदाहरण देकर कारण तथा दुष्परिणाम स्पष्ट करें। अगले अनुच्छेदों में रोकथाम की सीमाएँ, पूर्वतैयारी, राहत तथा पुनर्वास की आवश्यकता बताइए। लगभग 300 शब्दों के निबंध का समापन सरकार और नागरिकों के साझा दायित्व पर करें। निबंध के लिए शीर्षक पर्याप्त है; पत्र की तरह संबोधन या हस्ताक्षर नहीं लिखे जाते।

चरण 2: पूर्ण निबंध प्रस्तुत कीजिए **प्राकृतिक आपदाएँ**

प्रकृति मनुष्य को जीवन के लिए आवश्यक जल, वायु, भोजन और आश्रय देती है। किंतु प्राकृतिक प्रक्रियाओं के कुछ रूप अचानक व्यापक

विनाश का कारण बन जाते हैं। भूकंप, बाढ़, सूखा, चक्रवात और सुनामी ऐसी ही आपदाएँ हैं। ये हमें याद दिलाती हैं कि वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद मनुष्य को प्रकृति की शक्तियों के प्रति सजग रहना चाहिए।

विभिन्न आपदाओं के कारण अलग होते हैं। पृथ्वी की आंतरिक हलचलों से भूकंप आते हैं। अत्यधिक वर्षा और नदियों के उफान से बाढ़ का खतरा बढ़ता है, जबकि वर्षा की कमी सूखे को जन्म देती है। समुद्री तूफान तटीय क्षेत्रों में तबाही मचाते हैं। इन घटनाओं को पूरी तरह रोकना संभव नहीं, पर इनके दुष्परिणाम काफी हद तक कम किए जा सकते हैं।

मानवीय लापरवाही अक्सर प्राकृतिक संकट को अधिक घातक बना देती है। वनों की कटाई, नदी क्षेत्रों पर अतिक्रमण, अव्यवस्थित निर्माण और जलनिकासी की उपेक्षा से क्षति बढ़ती है। आपदा में लोगों की मृत्यु होती है, घर उजड़ते हैं और फसलें नष्ट हो जाती हैं। सड़कें, बिजली तथा संचार व्यवस्था टूटने से राहत पहुँचाना कठिन हो जाता है। विस्थापित परिवारों को भोजन, स्वच्छ पानी और चिकित्सा की आवश्यकता पड़ती है।

आपदा प्रबंधन केवल घटना के बाद सहायता बाँटने का नाम नहीं है। सुरक्षित भवन निर्माण, पर्यावरण संरक्षण, जलसंचय और मौसम संबंधी चेतावनियों का प्रभावी प्रसार भी आवश्यक हैं। विद्यालयों तथा समुदायों में बचाव अभ्यास होने चाहिए। स्थानीय प्रशासन के पास सुरक्षित आश्रय, प्राथमिक उपचार और लोगों को निकालने की स्पष्ट योजना रहनी चाहिए। राहत के बाद आजीविका तथा आवास की बहाली पर भी ध्यान देना चाहिए।

नागरिकों का सहयोग इस व्यवस्था को सफल बनाता है। संकट में अफवाहें फैलाने के बजाय विश्वसनीय सूचना माननी चाहिए और जरूरतमंदों की सहायता करनी चाहिए। सरकार, वैज्ञानिक संस्थाएँ और समाज मिलकर तैयारी करें, तो जनहानि घट सकती है। प्रकृति के प्रति संवेदनशील विकास और समय पर सावधानी ही सुरक्षित भविष्य का आधार हैं।

चरण 3: निष्कर्ष प्राकृतिक आपदाओं का सामना पूर्वतैयारी, सुरक्षित विकास, प्रभावी राहत और संवेदनशील पुनर्वास से किया जा सकता है। सामूहिक जिम्मेदारी तथा प्रकृति के प्रति विवेकपूर्ण व्यवहार निबंध का केंद्रीय संदेश हैं।

त्वरित सुझाव: प्राकृतिक आपदाओं पर लिखते समय कारण, प्रभाव और उपाय तीनों रखें; उपायों में आपदा से पहले की तैयारी तथा उसके बाद राहत और पुनर्वास का अंतर स्पष्ट करें।

20(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

बदलते सांस्कृतिक मूल्य [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सांस्कृतिक मूल्यों में जीवन को दिशा देने वाली मान्यताएँ, आचरण और सामाजिक संबंध आते हैं। विषय में उनके परिवर्तन के कारण और परिणाम स्पष्ट करने हैं।
- विचारात्मक निबंध में शीर्षक, भूमिका, क्रमबद्ध विवेचन और उपसंहार रखें। लगभग 300 शब्दों के मूल निबंध में परिवर्तन के लाभ और चुनौतियाँ दोनों आएँ।

चरण 1: प्रारूप और विषय की सीमा निर्धारित करें शीर्षक के बाद भूमिका में सांस्कृतिक मूल्यों का अर्थ बताएँ। मुख्य भाग में शिक्षा, शहरीकरण और संचार के कारण आए बदलाव समझाएँ। समानता जैसे उपयोगी बदलावों तथा उपभोक्तावाद जैसी चुनौतियों के उदाहरण दें। अंत में मानवीय मूल्यों को बचाते हुए परिवर्तन स्वीकार करने की बात रखें।

चरण 2: विचारों को संतुलित क्रम दें सभी पुरानी परंपराओं को अच्छा और हर नई प्रवृत्ति को बुरा मानने से बचें। पहले सहयोग और पारिवारिक आत्मीयता जैसे मूल्यों का उल्लेख करें; फिर जातिगत भेदभाव और स्त्री-असमानता के विरोध को सकारात्मक परिवर्तन बताएँ। बाहरी रहन-सहन और नैतिक मूल्यों के बीच अंतर स्पष्ट करने से निबंध विषय पर केंद्रित रहेगा।

चरण 3: पूर्ण नमूना निबंध लिखें **बदलते सांस्कृतिक मूल्य**

संस्कृति केवल वेशभूषा, भाषा और त्योहारों का नाम नहीं है। वह हमारे विचारों, व्यवहार और पारस्परिक संबंधों में भी दिखाई देती है। सत्य, करुणा, सहयोग, सहिष्णुता और बड़ों का सम्मान भारतीय सांस्कृतिक जीवन के महत्त्वपूर्ण आधार रहे हैं। समय के साथ इन मूल्यों

को समझने और अपनाने के ढंग बदल रहे हैं।

शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टि, शहरीकरण और संचार के विस्तार ने समाज को नई दिशाएँ दी हैं। संयुक्त परिवारों का स्थान अनेक जगह छोटे परिवार ले रहे हैं। व्यवसाय और अध्ययन के कारण लोग अपने मूल स्थान से दूर रहते हैं। अलग संस्कृतियों के संपर्क से खानपान, पहनावे और मनोरंजन में विविधता आई है। युवा अब परंपराओं को केवल पुराना होने के कारण स्वीकार नहीं करते; वे उनका औचित्य भी पूछते हैं।

इस परिवर्तन का सकारात्मक पक्ष महत्त्वपूर्ण है। स्त्री-शिक्षा, समान अवसर और व्यक्ति की स्वतंत्रता के प्रति जागरूकता बढ़ी है। जातिगत ऊँच-नीच तथा अंधविश्वासों को चुनौती मिल रही है। परिवार में बच्चों और महिलाओं की राय को स्थान देना भी सांस्कृतिक प्रगति है। जो परंपरा मनुष्य का सम्मान घटाती हो, उसका बदलना आवश्यक है।

दूसरी ओर, उपभोक्तावाद और दिखावे ने कुछ चिंताएँ उत्पन्न की हैं। सफलता का मूल्यांकन केवल धन और वस्तुओं से होने लगे तो ईमानदारी तथा संवेदना पीछे छूट सकती हैं। व्यस्त जीवन में बुजुर्गों की उपेक्षा, पड़ोसियों से दूरी और लोककलाओं के प्रति उदासीनता बढ़ सकती है। त्योहारों का आत्मीय मिलन केवल महँगे आयोजन में बदल जाना भी चिंताजनक है।

अतः आवश्यकता विवेकपूर्ण संतुलन की है। विद्यालयों में स्थानीय कलाओं, भाषाओं और लोकपरंपराओं से परिचय कराया जाए। परिवार संवाद, साझा जिम्मेदारियों और बुजुर्गों के अनुभवों को महत्त्व दें। नई तकनीक और विचार अपनाते हुए सहयोग, न्याय और सहानुभूति को व्यवहार में बनाए रखें। संस्कृति जीवित धारा है; उसका विकास परिवर्तन से होता है, किंतु उसकी सार्थकता मनुष्यता की रक्षा में है।

चरण 4: निष्कर्ष सांस्कृतिक परिवर्तन का मूल्यांकन समानता, संवेदना और मानवीय गरिमा के आधार पर होना चाहिए। रूढ़ियों को छोड़ना और उपयोगी परंपराओं को नए जीवन से जोड़ना निबंध का केंद्रीय निष्कर्ष है।

त्वरित सुझाव: इस विषय में एक अनुच्छेद सकारात्मक बदलावों पर और एक चुनौतियों पर लिखें; उपसंहार में परंपरा और आधुनिकता को मानवीय मूल्यों से जोड़ें।

20(ङ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

क्या नहीं कर सकती नारी [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विषय नारी की क्षमताओं, उपलब्धियों और समान अवसरों की आवश्यकता पर विचारात्मक निबंध माँगता है। उदाहरणों से तर्क पुष्ट करें और अतिशयोक्ति से बचें।
- निबंध में उपयुक्त शीर्षक, विषय की भूमिका, क्रमबद्ध मुख्य भाग और प्रेरक उपसंहार रखें। लगभग 300 शब्दों में क्षमता, बाधाओं और समाधान का संतुलित विवेचन करें।

चरण 1: निबंध का प्रारूप और आधार तय करें शीर्षक के बाद यह विचार रखें कि योग्यता का निर्धारण लिंग से नहीं होता। मुख्य भाग में शिक्षा, विज्ञान, शासन, खेल और दैनिक जीवन के उदाहरण दें। फिर उन सामाजिक बाधाओं को स्पष्ट करें जो अवसर सीमित करती हैं। उपसंहार में सम्मान, शिक्षा और समान भागीदारी का आग्रह करें।

चरण 2: उदाहरण और तर्क चुनें रानी लक्ष्मीबाई, कल्पना चावला और पी. टी. उषा के उदाहरण क्रमशः नेतृत्व, विज्ञान तथा खेल की क्षमता दिखाते हैं। केवल प्रसिद्ध महिलाओं तक सीमित न रहें; किसान, श्रमिक, शिक्षिका और चिकित्सक के योगदान का भी उल्लेख करें। घरेलू काम को स्त्री का अनिवार्य कर्तव्य बताने के बजाय साझा जिम्मेदारी और स्वतंत्र चुनाव पर बल दें।

चरण 3: पूर्ण नमूना निबंध लिखें **क्या नहीं कर सकती नारी**

मनुष्य की योग्यता का निर्धारण उसके लिंग से नहीं, उसकी शिक्षा, लगन और अवसरों से होता है। फिर भी लंबे समय तक नारी की क्षमताओं को सीमित दृष्टि से देखा गया। उसे घर की चारदीवारी तक बाँधने वाली सोच ने समाज की आधी आबादी की प्रतिभा को रोका। आज विभिन्न क्षेत्रों में उसका योगदान पूछता है कि अवसर मिलने पर नारी क्या नहीं कर सकती।

इतिहास में रानी लक्ष्मीबाई ने साहस और नेतृत्व का परिचय दिया। आधुनिक युग में कल्पना चावला की अंतरिक्ष यात्रा ने वैज्ञानिक

उपलब्धियों की नई संभावनाएँ सामने रखीं। पी. टी. उषा ने खेल जगत में भारतीय महिलाओं की प्रतिभा दिखाई। ये उदाहरण बताते हैं कि साहस, बुद्धि और अनुशासन किसी एक लिंग की संपत्ति नहीं हैं।

नारी का योगदान केवल प्रसिद्ध नामों तक सीमित नहीं है। खेतों में काम करती महिला, विद्यालय में पढ़ाती शिक्षिका, अस्पताल में सेवा करती चिकित्सक और परिवार की जिम्मेदारियाँ सँभालती स्त्री समाज की प्रगति में सहभागी हैं। प्रशासन, उद्योग, कला और सामाजिक सेवा में भी महिलाएँ अपनी योग्यता सिद्ध कर रही हैं। उनका श्रम और निर्णय परिवार तथा राष्ट्र दोनों को मजबूती देते हैं।

इसके बावजूद अनेक बाधाएँ बनी हुई हैं। अशिक्षा, बालविवाह, दहेज, असुरक्षा और अवसरों में भेदभाव प्रतिभा के विकास को रोकते हैं। कई महिलाओं को बाहर के काम के साथ घर का पूरा बोझ भी उठाना पड़ता है। इन समस्याओं को उनकी अक्षमता मानना अन्याय होगा; ये सामाजिक व्यवस्था की कमियाँ हैं।

इसलिए लड़कियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सुरक्षित वातावरण और आर्थिक स्वतंत्रता के अवसर मिलने चाहिए। परिवार में घरेलू जिम्मेदारियाँ साझा हों और बेटियों के सपनों को बेटों जितना सम्मान मिले। कार्यस्थलों पर समान अवसर तथा गरिमा सुनिश्चित हो। नारी को दया का पात्र समझने के बजाय अधिकारसंपन्न व्यक्ति मानना आवश्यक है। जब समाज उसके विकास में सहयोग देगा, तब उसकी उपलब्धियाँ और व्यापक होंगी। नारी की उन्नति पूरे समाज की उन्नति है।

चरण 4: निष्कर्ष शिक्षा, सम्मान और समान अवसर मिलने पर नारी हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा विकसित कर सकती है। उसकी उपलब्धियों के साथ सामाजिक बाधाओं और उनके समाधान को जोड़ना इस निबंध को पूर्ण बनाता है।

त्वरित सुझाव: प्रसिद्ध महिलाओं के दो या तीन उदाहरण देने के बाद सामान्य महिलाओं के श्रम का उल्लेख करें और अंतिम अनुच्छेद में अवसरों की समानता के ठोस उपाय लिखें।